PDF Compressor Free Version

Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

**अर्हत उवाच**

जहा आसाविणि णावं,
जाइअंधो दुरूहिया।
इच्छई पारमागंतुं, अंतराले
विसीयई।।

जन्मान्ध मनुष्य सच्छिद्र नौका में बैठकर समुद्र का पार पाना चाहता है, पर वह उसका पार नहीं पाता, बीच में ही डूब जाता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 36 • 13 - 19 जून, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-06-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

## चित्त में बसिया रे श्री तुलसी गुरुराज
## हृदय में रमिया रे तेरापंथ सरताज
## बां हाथा पलिया पुस्या ओ म्हांने म्हां पर नाज

अयि तुलसी गुरुराज तुम्हारी
छवि न जाए विसराई
तेरी कृति गुरु
महाश्रमण में दिखती तेरी परछाई
युवा शक्ति में प्राण भरें अब
युवा शक्ति का रूप विराट
भाग्य संघ का तब ही पाया
तुम सा तेजस्वी सम्राट

**आचार्य श्री तुलसी की 26वीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि**

**श्रद्धाप्रणत- तेरापंथ टाइम्स परिवार**

PDF Compressor Free Version



✦ जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

## नोखा में सकल समाज की तरफ से आचार्यप्रवर से चातुर्मास की पुरजोर अर्ज

# चेतना को शुद्ध रखने का उपाय है ईमानदारीपूर्ण जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

**नोखा, ५ जून, २०२२**

परम पावन का नोखा प्रवास का दूसरा दिन। महानंद प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में प्रामाणिकता, ईमानदारी, पारदर्शिता का बहुत महत्त्व है। चेतना को शुद्ध रखने का एक आयाम-उपाय है, आदमी ईमानदारीपूर्ण जीवन जीए।

अध्यात्म की साधना के क्षेत्र में सम्यक्त्व का भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। कहा गया है कि सम्यक्त्व ऐसा मित्र है, उससे बड़ा कोई मित्र नहीं। सम्यक्त्व से बड़ा कोई रत्न बंधु-भाई नहीं है। सम्यक्त्व से बड़ा कोई लाभ नहीं होता है। सम्यक्त्व के बिना चारित्र भी नहीं हो सकता। चारित्र के बिना सम्यक्त्व रह सकता है, पर चारित्र को सम्यक्त्व की गरज है। सम्यक्त्व रत्न की सुरक्षा करो। सम्यक्त्व जैसे बंधु के सामने राम-लक्ष्मण की जोड़ी कुछ भी महत्त्व नहीं रखते। गृहस्थ को भी जीवन में पैसे-परिग्रह के प्रति भी अवांछनीय आसक्ति न हो।

परिग्रह ऐसी चीज है, जो प्रेम को भी तोड़ने में समर्थ होता है। सम्यक्त्व-चारित्र धर्म ऐसी चीजें हैं, जो हमारी चेतना को निर्मल बनाने वाली होती है।

सच्ची बात, अच्छी बात कहीं पर मिले, उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। सम्यक्त्व पुष्टि के लिए दूसरी बात है कि तत्त्व बोध का प्रयास करें। तीसरी बात है—कषायमंदता। राग-द्वेष व क्रोध, मान-माया, लोभ प्रतनू रहे, शांत रहे। कोई बात का दुराग्रह न हो।

सच्चाई जहाँ मिले वहाँ दुराग्रह बीच में न आए।

सच्चाई के आकाश में उड़ने के लिए अनाग्रह और खोज इस पक्षी के दोनों पंख होने चाहिए। अन्वेषण से तत्त्व की प्राप्ति हो सकती है। धर्म का क्षेत्र हो या व्यवहार का क्षेत्र उसमें सच्चाई खोजने का प्रयास करें। यह आत्मा के लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

चाहे समाजनीति हो या राजनीति सब जगह सद्विचार-सदाचार अच्छा रहता है। विचार भी उन्नत रहे। आचार भी अच्छा रहे। गृहस्थ जीवन भी अच्छा रहे।

नोखा मंडी प्रवास का यह दूसरा दिन है। आज अर्जुनराम मेघवाल का भी आना हो गया। पुराने संपर्क में आए हुए हैं, राजनीति भी एक उच्च कोटि की सेवा है। इसमें अणुव्रत व सदाचार, सद्विचार भी रहे। जैविभा इंस्टीट्यूट से भी जुड़े हुए हैं।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी भी यहाँ विराज रही हैं। वे साधना से, चिंतन से भी वरिष्ठ हैं। चरित्र और आयु से भी वरिष्ठ हैं। साधना करने में आपकी ख्याति रही है। लोगों को समझाना भी परोपकार का काम है। आपके चित्त समाधि रहे। धर्म व धर्मसंघ की प्रभावना करती रहे।

ज्ञानशाला प्रस्तुति पर पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ज्ञानशाला की कई प्रस्तुतियाँ हुई। ज्ञानशाला एक उपयोगी उपक्रम है। जहाँ बालपीढ़ी का अच्छा निर्माण हो सकता है। बच्चों पर श्रम करके तैयारी करवाई गई है। बाल पीढ़ी में तत्त्वज्ञान का भी विकास होता रहे। पूज्यप्रवर ने सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई। आचार्य महाप्रज्ञ नोलेज सेंटर नोखा में पूज्यप्रवर के मंगलपाठ से शुरू हो रहा है। परम पावन ने आशीर्वचन फरमाया।

पूज्यप्रवर ने नोखा चतुर्मास करने के संदर्भ में फरमाया कि २०२३ में मुंबई जाना है। वापस राजस्थान कब आना यह तय नहीं है। बीदासर-मोमासर के बाद आपकी बात आती है। इतना अभी आगे के लिए वचनबद्ध होना मुश्किल है। संपर्क बना रहे।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि संघ हमारे जीवन का आधार होता है। संघ शक्ति का स्रोत होता है। जब तक हम संघ से जुड़े रहते हैं, तब तक विकास होता है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका संघ के अंग होते हैं। उनका विकास भी संघ से जुड़ा रहता है। तब हो सकता है। श्रावक की विशेषताओं को बताया। श्रावक श्रद्धाशील हो, विश्वासी हो, त्याग की भावना हो।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी, शासनश्री साध्वी समताश्री जी, साध्वी कुसुमप्रभाजी, साध्वी सिद्धांतप्रभाजी, साध्वी विकासप्रभाजी, मुनि मनन कुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, डॉ० प्रेमसुख मरोठी, भंवरलाल बैद, भोजराज बैद, कमल किशोर ललवाणी, इंद्रचंद बैद, टीपीएफ से डॉ० महेंद्र संचेती, महावीर नाहटा, ज्ञानशाला, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

डॉ० प्रेमसुख मरोठी की जीवन-वृत्त देहरी का दीपक श्रीचरणों में लोकार्पित किया गया। प्रगति मरोठी ने दीक्षा लेने की भावना अभिव्यक्त की। लाभचंद छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# अनीति से उपार्जित धन अर्थ नहीं अर्थाभास है : आचार्यश्री महाश्रमण

**जोरावरपुरा, ६ जून, २०२२**

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी दो दिवसीय नोखा प्रवास सुसंपन्न कर नोखा के ही उपक्षेत्र जोरावरपुरा स्थित तेरापंथ भवन पधारे। मुख्य प्रवचन में श्रमण परंपरा के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म शब्द प्रसिद्ध है। धर्म शब्द के अनेक अर्थ हो जाते हैं। जहाँ धर्म एक संदर्भ में आत्म-शुद्धि का साधन है। धर्म का एक अर्थ आत्म-साधना है। धर्म का दूसरा अर्थ संप्रदाय भी हो सकता है। तीसरा अर्थ कर्तव्य भी हो जाता है।

आत्मशुद्धि की साधना में अहिंसा, संयम, संवर, तप, ज्ञान, दर्शन, चारित्र यह सारा धर्म है। संप्रदाय धर्म में जैन, बौद्ध, ईसाई आदि धर्म आ जाते हैं। कर्तव्य धर्म में राष्ट्र धर्म, राज्य धर्म समाज धर्म आदि आ जाते हैं।

आत्मशुद्धि की साधना भी दो प्रकार की हो जाती है। एक अणगार धर्म, दूसरा अगार धर्म। साधु धर्म में महाव्रतों को मानना अनिवार्य होता है। अगार धर्म, गृहस्थ धर्म में धर्म तो वही है, पालन की मात्रा में अल्पता रहती है। श्रावक स्थूल रूप में अहिंसा-सत्य आदि का त्याग करता है।

साधु व श्रावक दोनों ही आत्म साधना के साधक हैं। एक मोटी माला एक छोटी माला। गृहस्थ अणुव्रत-बारहव्रत का पालन कर लें। अणुव्रत के नियम तो जैन-अजैन कोई भी पाल सकता है।

पुरुषार्थ चतुष्टयी—अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष—ये चार चतुवर्ग हैं। गृहस्थ में अर्थ और काम के साथ धर्म भी चाहिए, मोक्ष की साधना भी होनी चाहिए तो जीवन अच्छा रह सकता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि सामान्य धर्म की चार बातें हैं—सुपात्र में दान दो। ज्ञान दान, अभय दान भी अच्छा है। दूसरी बात है—गुरुओं के प्रति विनय रखो। तीसरी बात—सब प्राणियों के प्रति दया रखिए।

पाप कार्यों से अपनी आत्मा की व दूसरों की आत्मा की रक्षा करना दया है। चौथी बात है—व्यवहार न्यायपूर्ण होना चाहिए। नैतिकता रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने फरमाया था कि दो शब्द हैं—अर्थ और अर्थाभास। न्याय से उपार्जित धन अर्थ है। अन्याय-अनीति से अर्जित किया गया पैसा अर्थाभास है।

राजा होता है, उसके तीन कर्तव्य होते हैं—सज्जनों की रक्षा करना, दुर्जनों-असज्जनों पर अनुशासन करना व आश्रित प्रजा का भरण-पोषण करना। न्यायपूर्ण बात हो। दूसरों का हित हो, ऐसा विधि-विधान करने में रुचि रखना।

श्रीलक्ष्मी का मद नहीं करना चाहिए। अंतिम बात है—संतों की संगति करना चाहिए। अच्छी बात जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में गलत संस्कार नहीं आने चाहिए। अच्छे ग्रंथों का स्वाध्याय करना चाहिए।

राजा हो या प्रजा ये सामान्य सी बातें जीवन में उतारने का प्रयास करता चले तो ये जीवन भी अच्छा और आगे का जीवन भी अच्छा होगा। उम्र ज्यादा आ जाए तो आगे के जीवन पर विशेष ध्यान दें। वर्तमान जीवन बढ़िया होगा तो आगे का जीवन भी अच्छा हो सकेगा। धर्म का संचय करना चाहिए। आगे की टिफिन तैयार करें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

PDF Compressor Free Version



## सुसवाणी माता धाम मोरखाणा में तेरापंथ सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदार्पण

# ज्ञान विकास में एक सशक्त माध्यम बनता हैस्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

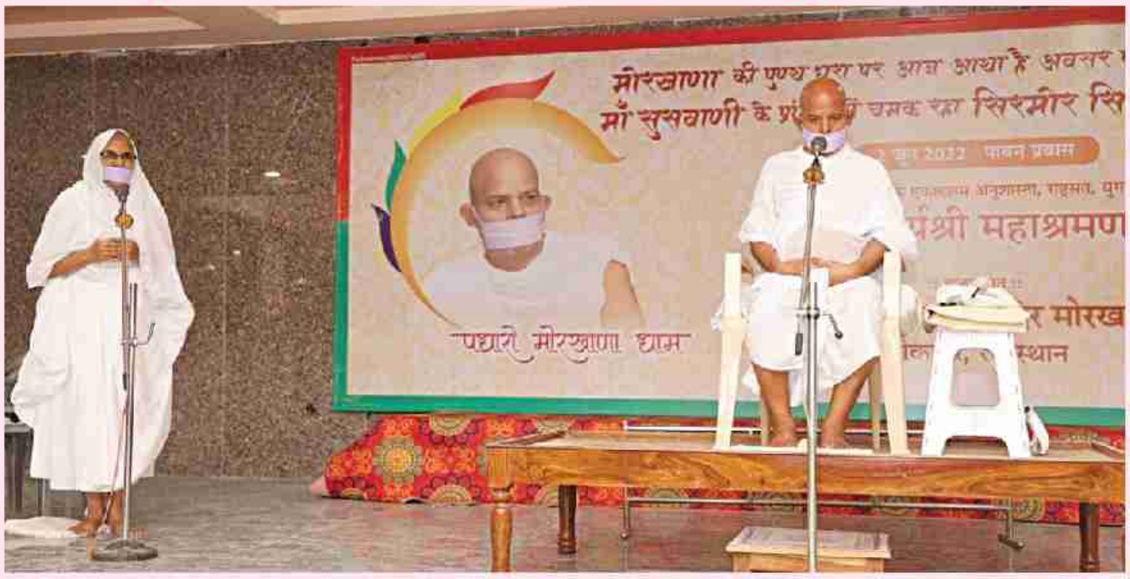


**मोरखाणा, २ जून, २०२२**

सुसवाणी माता शक्ति स्थल मोरखाणा, दुगड़ और सुराणा परिवार की कुलदेवी। दुगड़ कुल के महादीपक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज मोरखाणा पधारे। मानव के रूप में देव पुरुष परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक शास्त्रों में मोक्ष की बात आती है।

आगम में कहा गया है कि मोक्ष कैसा होता है—एकांत सौख्य वाला यानी जहाँ एकांत ही सुख होता है। दुःख होता ही नहीं। जैसे मोक्ष को जीव प्राप्त हो सकता है, बशर्ते कि उसका सारा ज्ञान प्रकाशित हो जाए। केवलज्ञान होने के बाद जीव में अज्ञान बिलकुल नहीं रहता। केवलज्ञान उसी मनुष्य में प्रकट होता है, जो राग-द्वेष को क्षीण कर देता है।

दो प्रकार के वीतराग होते हैं—उपशांत मोह वीतराग और क्षीण मोह वीतराग। उपशांत मोह वीतराग कोई बन जाए तो उसको केवलज्ञान नहीं हो सकता। उपशांत मोह वीतराग मनुष्य तो वापस नीचे की स्थिति में जाएगा। जो क्षीण मोह वीतराग बन गया है, वह केवलज्ञान को प्राप्त होता ही होता है।

क्षीण मोह वीतराग के अज्ञान व मोह नहीं रहता है। जिसका सर्वज्ञान प्रकाशित हो जाता है, वही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त हो सकता है। जीवन का लक्ष्य यह रहना चाहिए। कि मैं मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ूँ और उसके लिए मैं राग-द्वेष के भावों को प्रतनू-क्षीण बनाने का प्रयास करूँ।

ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान के साथ श्रद्धा सम्यक् हो कि केवलज्ञानी ने जो जान लिया वो सत्य ही है। उस पर मेरी श्रद्धा है। ज्ञान आदमी का यथार्थ है। ज्ञान विकास में एक सशक्त माध्यम बनता है—स्वाध्याय। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो ऐसे तत्त्वों का अध्ययन करें, जिस ज्ञान से आदमी राग से विराग की ओर आगे बढ़े, आदमी श्रेयों—कल्याणों में अनुरक्त हो जाए। आदमी की चेतना मैत्री भाव से भावित हो जाए। ऐसा स्वाध्याय मुख्यतया करना चाहिए।

स्वाध्याय एक प्रकाश देने वाला तत्त्व है। ज्ञान सम्यक् होता है, तो आदमी का आचरण भी सम्यक् हो सकता है। हमारी सृष्टि में छः द्रव्य हैं। इस सृष्टि में विभिन्न चीजें हैं। साधना का मूल तत्त्व है—वीतरागता। समता में रमण करना। राग-द्वेष में नहीं जाना। प्रेक्षाध्यान में बताया जाता है कि प्रियता-अप्रियता के भाव से मुक्त रहें।

आज हमारा आठ वर्ष से अधिक समय बाद मोरखाणा आना हुआ है। श्री सुसवाणी माता का परिसर है। जैन दर्शन के अनुसार सृष्टि में देव शक्तियाँ भी हैं। बताया गया है कि संख्या में मनुष्यों की अपेक्षा देवता ज्यादा हैं। तीर्थंकरों के पास देवता जाते हैं। उनकी वाणी को सुनते हैं, तो उनकी आँखें भर आती हैं। वेद शक्तियाँ तो तीर्थंकरों जैसे मनुष्यों को नमस्कार करती हैं। देवों का भी कभी जीवन समाप्त होता है।

कुलदेवी की आस्था का अपना-अपना स्थान होता है। साधु बनने के बाद तो सांसारिक जीवन से विरक्ति हो जाती है। संसार पक्ष की बात करें तो मैं दुगड़ परिवार से जुड़ा हुआ हूँ। सुसवाणी माता सुराणा-दुगड़ दोनों से जुड़ी हुई है। माताजी को मंगलपाठ भी बोल दिया। धर्म की चीज तो देव और मनुष्य दोनों के काम की चीज है। माताजी जहाँ भी हैं, हमारा संदेश है कि उनकी आत्मा चित्त समाधि में रहे। माताजी भी तीर्थंकरों के दर्शन करने का प्रवचन सुनने का प्रयास करें। साधु-संतों की वाणी मिले तो भी अच्छी बात है। उनकी आत्मा भी खूब अध्यात्म की दृष्टि से अध्यात्म की दिशा में प्रवर्धमान रहे। कभी परमधाम मुक्ति को प्राप्त करे।

दुनिया में देव शक्ति भी होती है। आस्था अपनी-अपनी हो सकती है, पर देवों की आशातना-अवज्ञा नहीं होनी चाहिए। साधु भी जहाँ देव स्थान हो पैर में पदत्राण पहना हुआ नहीं होना चाहिए। दुगड़-सुराणा परिवार जैन धर्म से जुड़े हुए हैं, उनमें भी धर्म के संस्कार अच्छे रहें। नमस्कार महामंत्र का जप व सामायिक की साधना जितनी हो सके करें। तेरापंथी परिवारों में शनिवार सायं ७ से ८ बजे सामायिक प्रयास होना चाहिए। खान-पान में शुद्धता रहे। धार्मिक साधना जीवन में जितनी अच्छी हो सके, करने का प्रयास चलता रहे।

देव शक्तियाँ शास्त्र सम्मत है। अनेक प्रकार के देव होते हैं। देवियाँ, इंद्र-इंद्राणियाँ भी होती हैं। हमारे धर्मग्रंथों में देव व्यवस्था भी विस्तार से प्राप्त होती है। माताजी के प्रति हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि वह धरती पावन हो जाती है, जिस पर सत्संग होता है। मोरखाणा की धरती भी प्रणम्य बन गई है कि परमपूज्य की सन्निधि में विशाल सत्संग हो रहा है। जिन लोगों को महापुरुषों के दर्शन हो जाते हैं वे धन्य हो जाते हैं। प्रवचन सुनने और उपासना करने से आदमी धन्य बन जाता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिनंदन में सुसवाणी मंदिर ट्रस्ट से सुरेशराज सुराणा, नरेंद्र सुराणा, पड़िहारा धर्मशाला से लक्ष्मीपत सुराणा, मोहनलाल सुराणा, तेजकरण सुराणा, धर्मचंद सुराणा, भीखमचंद सुराणा, नोखा के विधायक बिहारी विश्नोई, डूंगरगढ़ विधायक गिरधारी महिमा, सुराणा परिवार की बहनें, सुनीता सुराणा, सुसवाणी माता परिवार कोलकाता, नोखा, तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ युवक परिषद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के षष्ठीपूर्ति पर मुंबई से जिनागम पत्रिका विशेषांक पूज्यप्रवर को लोकार्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने आशीवर्चन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# पाप साफ करने के लिए करें संयम रूपी जल से स्नान : आचार्यश्री महाश्रमण

**केशरदेशर, १ जून, २०२२**

तपती धूप में पूज्यप्रवर बीकानेर के ग्रामीण अंचल में विहार करते हुए १३ किलोमीटर का विहार कर केशदेशर पधारे। मुख्य प्रवचन में पुण्य पुरुष, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मानव शरीर में पाँच इंद्रियाँ होती हैं। एक विकसित कोटी का शरीर मनुष्य का शरीर होता है। शरीर तो अन्य जीव भी धारण करते हैं, पर पाँच इंद्रियाँ सब के नहीं होती। आदमी के पाँच इंद्रियों के साथ मन भी होता है।

हमारी ये इंद्रियाँ ज्ञान की साधन भी बनती हैं। इंद्रियों से पदार्थों आदि का भोग भी हो जाता है। इंद्रियों का संयम रखना खास बात है। मन में अच्छा चिंतन करें कि मन-मंदिर में परमात्मा विराजमान हो जाए। ये मानव जीवन हमारी मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ाने वाला बन सकता है, अगर हम इंद्रियों का संयम रखें और कुछ साधना भी करें।

हम परमात्मा का स्मरण करते हैं। हमारा मन परम तत्त्व में लीन हो सके, नाम लेने से हमारी चेतना शुद्ध बने। भारत में अनेक धर्म-संप्रदाय हैं। सबके अपने-अपने विचार हैं। कितनी अच्छी-अच्छी शिक्षाएँ धर्मग्रंथों से मिल जाती है। शुद्ध भावना से राम को भी याद कर लिया तो निर्जरा हो सकती है।

जैन दर्शन में राम एक परमात्म पद है। रा बोलते समय मुँह खुल जाता है, पाप बाहर निकल जाते हैं। म बोलते समय होठ बंद हो जाते हैं, पाप वापस नहीं आता है। गार्हस्थ्य में भी कुछ लोग साधु की तरह मिल सकते हैं। कमल पत्र की तरह व्यक्ति संसार में रहते हुए निर्लेप रहने का प्रयास करें। ज्यादा मोह न करें। उससे दूर रहें।

जो संसार में काँटा-काँचन से विरक्त है, वो साधु है, उसमें परमात्मा का अंश विशेष है। त्यागी संतों का गाँव में आना भी अच्छी बात होती है। उनके सदुपदेश को सुनकर जीवन में उतारना अच्छा है। साधु के तो दर्शन ही अपने आपमें पवित्र हैं। साधु तो चलते-फिरते तीर्थ हैं। संत जो त्यागी हैं, उनकी वाणी कल्याणी होती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि स्नान करने से पाप साफ नहीं होते हैं। आत्मा रूपी नदी में संयम रूपी जल से स्नान करें। जीवन में संयम, सत्य, शील, दया की भावना अच्छी रखो तो आत्मा का कल्याण हो सकता है।

दूसरों को दुःख देना पाप है और उपकार करना पुण्य है। दूसरों का आध्यात्मिक हित करना बहुत बड़ा धर्म है। जीवन में सत्य-ईमानदारी है तो बड़ी साधना है। जीवन में धर्म रहे, अच्छे रास्ते पर चलें। आत्मा का कल्याण हो, ऐसा प्रयास करें, अच्छा काम करें।

दिवंगत साध्वी हुलासांजी की सहवर्ती साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। साध्वियों का अच्छा विकास होता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल की प्रिंसिपल वीणा गहलोत, केशर देशर से जुड़े शिविर की महिलाओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# अच्छी संगति से जीवन का उत्थान संभव

**कटक।**

मुनि जिनेश कुमार जी का एक दिवसीय प्रवास चावलिया गंज स्थित कंदोई ट्रांसपोर्ट ऑफिस में हुआ। जहाँ ऑफिस कर्मचारियों एवं अधिकारियों के मध्य जीवन उत्थान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि सत्संग से जीवन का उत्थान संभव है। अच्छी संगति व्यक्ति के कल्याण का निमित्त बन सकती है। कार्य के प्रति निष्ठा, मालिक पर भरोसा, व्यवहार में प्रामाणिकता, नशामुक्ति, क्रोध पर नियंत्रण, सदाचार आदि सूत्र जीवन के उत्थान के लिए आवश्यक हैं।

मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मुनिश्री के पदार्पण पर कंपनी के मालिक गणेश कंदोई ने अपना सौभाग्य बताते हुए स्वागत किया।

इस अवसर पर सुरेश कमाणी, मोहनलाल सिंघी, दिनेश जोशी ने गीत व अपने विचार व्यक्त किए। माणक पुगलिया ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर ऑफिस के कर्मचारियों के अतिरिक्त मारवाड़ी समाज के गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक व्यक्तियों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

PDF Compressor Free Version



# कल्याणकारी होती है त्यागी और ज्ञानी साधु की संगत : आचार्यश्री महाश्रमण

**सलुंडिया, ३ जून, २०२२**

मोरखाणा में एक रात्रि का प्रवास संपन्न कर आचार्यप्रवर १५ किलोमीटर का विहार कर सलुंडिया ग्राम पधारे। मुख्य प्रवचन में परम आचारकुशल आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में बताया गया है–चार परम अंग, चार महत्त्वपूर्ण चीजें प्राणी के लिए दुर्लभ होती हैं। पहली चीज है–मनुष्यत्व। मनुष्य जन्म मिलना कठिन होता है।

मनुष्य जन्म मोक्ष का द्वार है। दूसरा ऐसा कोई जन्म नहीं है कि वहाँ से मोक्ष में जाया जा सके। चाहे देव गति, तिर्यंच गति या नरक गति हो। जो साधना-आराधना, केवलज्ञान मनुष्य कर सकता है और कोई प्राणी नहीं कर सकता।

दूसरी दुर्लभ चीज है–श्रुति–सुनना। धर्म की बात को सुनना। जिनको त्यागी संत से धर्म की बात सुनने का मौका मिलता है, वे क्षण सौभाग्य के होते हैं। तीसरी बात दुर्लभ है–श्रद्धा। धर्म की बात सुनकर उस पर श्रद्धा हो जाना और दुर्लभ है। चौथी दुर्लभ बात है–संयम से पराक्रम। साधु बन जाना बड़ा मुश्किल है। कोई-कोई धन्य भाग्य होते हैं, जिनमें साधु बनने की भावना जागती है। कोई अणुव्रती बन जाता है।

गुरुदेव तुलसी ने जीवन के बारहवें वर्ष में एवं परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने जीवन के ग्यारहवें वर्ष में मुनि दीक्षा स्वीकार कर ली थी। संयम में पुरुषार्थ जागना और भी मुश्किल है। हम सब भाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जन्म प्राप्त हो गया। कईयों को वो प्राप्त भी नहीं हैं साधु की संगत ही कल्याणकारी होती है।

साधु त्यागी और ज्ञानी है, साथ में ज्ञान की बात बताता है, उसका बड़ा महत्त्व है। विद्वता को साधुता का मंच मिल जाए तो ऊँची बात हो जाती है। देवों के लिए भी साधु वंदनीय है। हम मानव जीवन का अच्छा उपयोग करें। श्रुति श्रद्धा, धर्म में पराक्रम, संयम में पराक्रम हो जाए तो कल्याण होना आसान हो सकता है।

आज सलुड़िया आए हैं। गाँव के लोगों को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सलुंडिया के सरपंच रामस्वरूप विश्नोई, सिद्धराज विश्नोई, ओमप्रकाश मीणा (प्रिंसिपल-स्थानीय विद्यालय), जोरावरपुरा महिला मंडल, विमला देवी मालु, भीनासर तेरापंथ महिला मंडल, देवकिशोर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हमारे में अपनत्व-सद्‌भावना रहनी चाहिए।

## महिला मंडल के विविध आयोजन

### ध्यान की कार्यशाला का आयोजन

**हैदराबाद।**

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी और अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में ध्यान कार्यशाला का संयुक्त आयोजन किया गया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का अवदान करें प्रेक्षाध्यान एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार मासिक प्रेक्षावाहिनी कक्षा और रूपांतरण शिल्पशाला–ध्यान का सिंगिंग बाल प्ले स्कूल में आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलभावना से हुई। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेक्षाध्यान गीतिका का संगान किया गया।

इस अवसर पर साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि हम विश्व के कोने-कोने की खबर रखते हैं, किंतु अपने स्वयं के भीतर हम नहीं देखते हैं। अपने आपको जानने के लिए ध्यान का प्रयोग आवश्यक है। साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि योग ३६५ दिन ही करना चाहिए। यह तीन प्रकार के होते हैं–शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक। साध्वीश्री जी ने महाप्रयाण ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वासप्रेक्षा, ॐ की ध्वनि, आनंद केंद्र पर ध्यान के प्रयोग अंत में शरण सूत्र व तीन बार महाप्राण ध्वनि के साथ प्रयोग संपन्न करवाया।

महिला मंडल की अध्यक्ष अनिता गीड़िया ने सभी का स्वागत किया। प्रेक्षावाहिनी की संवाहक रीता सुराणा ने शुभकामनाएँ दी व प्रेक्षावाहिनी से भाई-बहनों को ज्यादा से ज्यादा जुड़ने को कहा। नव घोषित नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी को महिला मंडल की ओर से ढेर सारी बधाईयाँ दी और आध्यात्मिक मंगलकामना की। मंत्री श्वेता सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

इस अवसर पर प्रवक्ता सरोज सुराणा, चेतना बोथरा, सरोज भंडारी, चंदा जैन, सरिता चिंडालिया, रंजु बैद आदि बहनें उपस्थित थीं।

### षष्टीपूर्ति के अवसर पर कार्यक्रम

**टोहाना, हरियाणा।**

तेममं, टोहाना द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के षष्टिपूर्ति के अवसर पर अनुपम आध्यात्मिक उपहार से उपहृत किया गया। महिला मंडल ने साल भर में ३६००० सामायिक के संकल्प पत्र गुरुदेव को भेंट किए जो १०८ सामायिक प्रतिदिन की औसत से है। इसके साथ ही अढ़ाई करोड़ ओम् भिक्षु जप का भी संकल्प लिया गया।

तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा उषा जैन ने बताया कि एक धर्माचार्य को उनके जन्मदिवस पर आध्यात्मिक उपहार से बड़ा कोई उपहार नहीं होता। उन्होंने संकल्प करने वालों तथा ओम भिक्षु जप करने वालों को साधुवाद दिया तथा उनके प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि हम भविष्य में भी गुरुदेव को ऐसे आध्यात्मिक उपहार भेंट करते रहें। इन उपहारों से हमारी ही आत्मा का कल्याण होता है, जो गुरुदेव की अभिलाषा है।

### श्रीउत्सव मेले का आयोजन

**चेन्नई।**

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में अग्रवाल विद्यालय वेपेरी में दो दिवसीय श्रीउत्सव मेले का आयोजन हुआ।

श्रीउत्सव मेले में लगभग ६० बहनों ने स्टॉल लगाए। मुख्य अतिथि अधिवक्ता मद्रास हाईकोर्ट शीला भंडारी, अभातेममं कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला, टीपीएफ अध्यक्ष राकेश खटेड़, अनुदानदाता उगमराज सांड ने श्रीउत्सव मेले के अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। मंचीय कार्यक्रम का संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

आगंतुकों का स्वागत राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला ने किया। मुख्य अतिथि का परिचय कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने दिया। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष गुणवंती खांटेड ने किया।

आगंतुक महानुभावों ने चेन्नई महिला मंडल के इस आयोजन की सराहना की। महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, परामर्शकगण उषा बोहरा, महिला मंडल पदाधिकारी गण एवं कार्यसमिति सदस्य, कन्या मंडल संयोजिका भवि बाफना, तेरापंथ सभा मंत्री गजेंद्र खांटेड आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्रीउत्सव मेले की संयोजिका गुणवंती खांटेड, अलका खटेड, हेमलता नाहर के श्रम से आयोजन सफल हुआ। इस आयोजन में कन्या मंडल ने गेम्स, लकी ड्रा आदि के माध्यम से आयोजन को आकर्षित एवं रोचक बनाया।

### सब प्राणियों के प्रति दया...

(पृष्ठ २ का शेष)

साधु और श्रावक का तीसरा मनोरथ है–अपश्चिमांतक संलेखना-संथारा मुझे आए। जीवन में धार्मिकता रहे तो आगे का जीवन भी कल्याणकारी बन सकता है।

आज जोरावरपुरा आना हुआ है। अच्छा श्रद्धा का क्षेत्र है। जनता में खूब धार्मिक भावना रहे।

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने बताया कि जीवनशैली कैसी होती है, यह आचार्यप्रवर के जीवन की कला से सीख सकते हैं। श्रेष्ठ जीवन वह है, जो कम से कम ले और ज्यादा से ज्यादा दे। साध्वी कुसुमप्रभाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में तेरापंथ सभाध्यक्ष राजेंद्र मरोठी, तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र बुच्चा, तनीषा बुच्चा, तेरापंथ टाइम्स के कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, स्थानीय पार्षद नारायण सिंह राजपूत, जेठुसिंह राजपूत, महिला मंडल अध्यक्ष स्नेहलता मरोठी, ज्ञानचंद मरोठी, कनक अजय बुच्चा, यश बुच्चा, मोनिका बुच्चा, कनक-पवन बुच्चा, अजीत मरोठी ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। जोरावरपुरा के तीन जोड़ों ने आजीवन अब्रह्मचर्य का व्रत लिया। तेयुप व महिला मंडल द्वारा त्याग-तपस्या की भेंट श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। दिन भर के प्रवास के पश्चात आचार्यप्रवर ने सायं में विहार कर नोखा गाँव पधारे।

## कार्यशाला का आयोजन

**कोलकाता।**

टीपीएफ, साउथ कोलकाता और पूर्वांचल कोलकाता के संयुक्त प्रयास से वर्तमान समय में कॉरपोरेट वर्ल्ड की सबसे बड़ी उलझन को समझने एवं उसके समाधान के लिए एक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महासभा के भिक्षु ग्रंथागार में किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने किया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में टीपीएफ के मूलमंत्र 'हमारा संघ हमारा दायित्व' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई। कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ साउथ कोलकाता की फेमिना कन्वेनर कंचन सिरोहिया ने मंगलाचरण के संगान से की। इसके पश्चात टीपीएफ पूर्वांचल कोलकाता के निशांत बैद ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मोहन राम गोयनका का परिचय करवाया। इसके पश्चात गोयनका ने वर्तमान समय में आरओसी की तरफ से आ रही कंपनियों को नोटिसेज की जानकारी एवं इस विषय की बारीकियों को समझाकर सबका मार्गदर्शन किया। अंत में उन्होंने जिज्ञासाओं का समाधान किया। टीपीएफ के ट्रस्टी जयचंद मालू ने कार्यक्रम की सराहना की।

टीपीएफ पूर्वांचल कोलकाता के अध्यक्ष प्रवीण सुराना ने सभी का आभार ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में उपस्थिति टीपीएफ के ट्रस्टी जयचंद मालू, कोलकाता सभा के मंत्री अजय भंसाली, टीपीएफ कोलकाता के निवर्तमान अध्यक्ष कमल जैन, टीपीएफ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष मनोज सेठिया एवं अन्य सदस्यों की रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में कन्वेनर रोहित दुगड़ एवं निशांत बैद का उल्लेखनीय योगदान रहा।

PDF Compressor Free Version



### आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस पर

# तेरापंथ को विश्वविख्यात बनाने वाले आचार्यश्री तुलसी

❐ मुनि कमल कुमार ❐

भारत देश वीर और वीरांगनाओं की जन्मभूमि है। इस धरती पर अनेक वीरों ने जन्म लेकर देश का गौरव बढ़ाया है। उसी क्रम में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी का नाम भी बहुत सम्मान के साथ लिया जा सकता है।

आचार्य तुलसी का जन्म विक्रम संवत् १९७१ को राजस्थान के मारवाड़ संभाग में नागौर जिले के प्रसिद्ध शहर लाडनूं में पिता झूमरमल खटेड़ के घर माता वदनाजी की कुक्षि से कार्तिक शुक्ला द्वितीया को हुआ। आप अपने परिवार में सबसे छोटे थे। बचपन में ही आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया था। घर की सारी जिम्मेदारी श्री मोहनलाल जी खटेड़ कुशलतापूर्वक वहन करते थे।

आपकी आदरणीय माता वदनाजी एक धर्मनिष्ठ श्राविका थी। बचपन में ही माता जी से आपको धार्मिक संस्कार प्राप्त हुए। आपके बड़े भाई चंपालाल जी आपसे एक वर्ष पूर्व ही पूज्य कालुगणी के करकमलों से चुरू में दीक्षित हुए। आपका साधु-साध्वियों से निरंतर संपर्क था। प्रतिदिन साधु-साध्वियों के दर्शन के बाद ही आप प्रातराश किया करते थे।

पूज्य कालुगणी का लाडनूं में पावन पदार्पण आपके सौभाग्य का सूचक बना। पूज्य कालुगणी का मनमोहक व्यक्तित्व आपके मन मानस में छा गया। मन में दीक्षा के भाव जागे और भाई-बहन (तुलसी और लाडां) की दीक्षा हो गई। दीक्षा के पश्चात आपने अपना अमूल्य समय अध्ययन और साधना में लगा दिया। मात्र १६ वर्ष की अवस्था में आप एक कुशल अध्यापक बन गए। गुरुकुलवास में संतों को अध्ययन कराते आपकी अप्रमत्त चर्या सभी के लिए प्रेरणा बनती गई। आपके कंठ सुरीले थे, प्रवचन के समय जनता झूम उठती थी। आपकी अनेक विशेषताओं को देखकर अष्टमाचार्य कालुगणी ने मात्र २२ वर्ष की अवस्था में आपको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया।

आचार्यश्री तुलसी ने आचार्य बनने के बाद तेरापंथ समाज को नए-नए आयाम दिए, जिससे व्यक्ति-व्यक्ति का उद्धार हो। उन्होंने केवल जैन धर्म और तेरापंथ के लिए ही नहीं जन-जन के कल्याण का अभियान चलाया। उनके द्वारा चलाया गया अणुव्रत आंदोलन एवं प्रेक्षाध्यान जैन-अजैन सबके लिए ग्राह्य हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद एवं प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी इसकी हृदय से प्रशंसा की और उन्होंने इस आंदोलन को गति प्रदान की। समाज के लिए 'नया मोड़ आंदोलन' बहुत कारगर साबित हुआ। बाल विवाह, मृत्यु भोज, घुँघट प्रथा एवं महिलाओं की शिक्षा इसके मुख्य आयाम थे।

आज समाज में जो महिलाओं का विकास नजर आ रहा है, उसमें गुरुदेव श्री तुलसी का दूरदर्शी चिंतन का सुश्रम बोल रहा है।

तेरापंथ समाज में ज्ञानशाला, किशोर मंडल, कन्या मंडल, युवक परिषद, महिला मंडल आदि के कारण हम नित्य नई प्रतिभाओं को देख रहे हैं। साहित्य निर्माण का कार्य संघ प्रभावक का मुख्य कारण है। आगम संपादन, अणुव्रत सहित्य, प्रेक्षाध्यान साहित्य, जीवन-विज्ञान, इतिहास तत्त्व, कथा गीत आदि-आदि अनेक विधाओं से लिखा गया साहित्य जनप्रिय बना।

आचार्यश्री तुलसी ने पंजाब से कन्याकुमारी तक की पैदल यात्रा करके इंसान को इंसान बनाने का महनीय कार्य किया। उनके अवदानों को प्रस्तुत करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान होगा। पूर्ण स्वस्थ अवस्था में आपने आचार्य पद का विसर्जन कर अपने सक्षम उत्तराधिकारी युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्य महाप्रज्ञ बनाकर श्लाघनीय कार्य किया, जो आज के इस पद-लिप्सित युग के लिए बोधपाठ बन गया।

आपको सरकार, धर्मसंघ, समाज और संस्थाओं द्वारा समय-समय पर सम्मानित किया गया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, भारत ज्योति, युगप्रधान, वाक्पति, गणाधिपति, हकीम खाँ, सूर खाँ का आदि-आदि।

मैं मेरे दीक्षा प्रदाता, भाग्यविधाता, भवजल त्राता परमपूज्य गुरुदेव के २६वें महाप्रयाण दिवस पर यही मंगलकामना अर्पित करता हूँ कि आपके द्वारा प्रदर्शित पथ पर निरंतर गतिमान रहते हुए स्व-पर कल्याणकारी बनूं।

महाप्रयाण की रजत जयंती पर परम आदरणीय पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी का गंगाशहर शक्तिपीठ पर पावन पदार्पण केवल गंगाशहर निवासियों के लिए ही नहीं अपितु पूरे तेरापंथ समाज के लिए गौरव और आह्लाद का विषय है। आचार्यश्री महाश्रमण जी की सूझबूझ, विनम्रता, पवित्रता एवं कर्तव्यनिष्ठा सभी के लिए अनुकरणीय है।

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
## जैन विधि - अमूल्य निधि

### नूतन गृह प्रवेश

**सूरत।**

बम्बोरा (राजस्थान) निवासी, सूरत प्रवासी गणेश लाल मेहता के सुपुत्र कांतिलाल मेहता के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, मनीष कुमार मालु, मीठालाल भोगर ने सानंद संपन्न करवाया।

मेहता परिवार स्थानकवासी है। गणेशलाल, कांतिलाल व उनके सभी परिजनों ने जैन संस्कार विधि को वर्तमान समय में सुगम एवं उपयोगी बताया। सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

### नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

**अहमदाबाद।**

बाबूलाल पृथ्वीराज बागरेचा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से करवाया गया।

संस्कारक विजय छाजेड़ एवं दीपक संचेती ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि संपादित करवाई। परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक दीपक संचेती एवं विजय छाजेड़ ने किया।

### विवाह संस्कार

**गंगाशहर।**

गंगाशहर निवासी नरेंद्र कुमार छल्लाणी के सुपुत्र विरेंद्र छल्लाणी का शुभ विवाह शोभाचंद नाहर व उम्मेदमल जम्मड़ की सुपुत्री सुनीता के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ।

अभातेयुप संस्कारक कन्हैयालाल बोथरा, पवन छाजेड़, हड़मानमल दुगड़, पीयूष लुणिया और देवेंद्र डागा ने विवाह संस्कार मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

### जैन संस्कार विधि

**रायपुर।**

विकास पारख के नूतन गृह प्रवेश पूजन जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक अनिल दुगड़ द्वारा संपूर्ण विधि संपादित हुई। तेयुप मंत्री गौरव दुगड़ ने आभार व्यक्त किया।

संस्कार विधि में जैन संस्कार विधि प्रभारी सुशील डागा, विकास सिपानी की उपस्थिति रही।

### पाणिग्रहण संस्कार

**पूर्वांचल-कोलकाता।**

सुजानगढ़ निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी प्रकाश चोरड़िया की सुपुत्री संजना चोरड़िया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार पाली निवासी, स्वर्गीय सुरेश चंद पटवा के सुपुत्र अभिषेक पटवा के संग जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक महेंद्र दुगड़ व सहसंस्कारक पंकज आंचलिया, जितेंद्र सिंघी द्वारा संपन्न करवाया।

प्रकाश चोरड़िया ने परिषद व संस्कारकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

### प्रतिष्ठान शुभारंभ

**जयपुर।**

शांतिदेवी-विमल संचेती के सुपुत्र अभिषेक संचेती के प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस बैंगानी एवं तरुण बोथरा ने विधि-विधान से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

### विवाह संस्कार

**टालीगंज।**

कोलकाता प्रवासी स्व० निर्मल कुमार रायजादा के सुपुत्र श्रेयांस एवं तिनसुकिया, आसाम प्रवासी शंकरदास की सुपुत्री रुमा का विवाह जैन संस्कार विधि से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंगलपाठ से हुआ। अभातेयुप के संस्कारक महेंद्र दुगड़, नवीन बागरेचा एवं पंकज आंचलिया ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा इस विवाह संस्कार को संपन्न करवाया।

परिषद के मंत्री ज्ञानवीर डागा द्वारा परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया गया। अध्यक्ष अरिहंत घोड़ावत ने परिषद की ओर से नव दंपति को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

PDF Compressor Free Version



✦ पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# साध्वीप्रमुखा मनोनयन के अवसर पर मन के भाव

### ● मुनि जयकुमार, मुनि मुदितकुमार ●

आनन्द-आनन्द-आनन्द
परम आनन्द
हर्षानुभूति की अभिव्यक्ति
किन शब्दों में
क्योंकि भावों के सामने
शब्दों ने ले ली मुक्ति
आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा
सम्प्रेषित
आपके भीतर में है
आध्यात्मिक शक्ति
आपकी विरक्ति व गुरु भक्ति
ने लिया आज साकार रूप
इसलिए खोज रहा हूं
आपकी अभ्यर्थना वर्धापना में
अभिव्यक्ति के अनुरूप शब्दों में
भावों का पूर्ण स्वरूप
गर्व है हमें कि
साध्वी समाज के ताज ने
ली आपकी शरण
आचार्य महाश्रमण की कृपा का
आपने किया वरण
आपके नेतृत्व में हम सबको मिले
अध्यात्म और वैराग्य का
पौष्टिक संपोषण
आत्मिक संपोषण
आत्मिक ज्ञान की ग्रंथियों का हो
विमोचन
संघ को मिले आपके अनुभवों का
सत्यं-शिवं-सुंदरं का विमर्षण
परम मुक्ति के पथ का मिले
हमें सम्यक् मार्ग दर्शन
आपके प्रति है मेरा प्रशस्त
आध्यात्मिक भावों का समर्पण
अनन्त अनन्त मंगल भावना।

### ● मुनि उदितकुमार ●

समादरणीया साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी!
परम श्रद्धेय युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के स्थान पर साध्वी प्रमुखा के पद पर आपश्री की नियुक्ति की है।
आपने अपनी वैराग्य-संयम यात्रा मुमुक्षु के रूप में शुरू की। समणी, समणी नियोजिका, साध्वी, मुख्य नियोजिका से साध्वी प्रमुखा जैसे अत्यन्त सम्मानजनक, गौरवपूर्ण एवं कार्यकारी पद पर स्थापित हुई है। यह सब गुरुकृपा योग्यता व पुण्यवत्ता का फलित है। आपको तीन-तीन गुरुओं की अनुकंपा प्राप्त हुई है।
साध्वीप्रमुखाश्री! आपके साध्वीप्रमुखा चयन के साथ हमारे दीक्षा दिवस का सहज संयोग जुड़ गया। साथ ही मेरी जन्मभूमि व दीक्षाभूमि सरदारशहर में यह ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुआ है।
मैं मंगल कामना करता हूं-
- आप पर सदैव गुरुकृपा की दृष्टि होती रहे।
- आपका कार्यकाल यशस्वी रहे।
- आप सर्वतोभावेन स्वस्थ रहे।
- आपकी सक्रियता बनी रहे।

-----------------------------

### ● मुनि निकुंजकुमार ●

आदरणीय साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी
'युगप्रधान' आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महत्ती कृपा कर तेरापंथ धर्मसंघ की गौरवशाली साध्वीप्रमुखा परंपरा में नौवें स्थान पर आपश्री को मनोनीत कर चतुर्विध धर्मसंघ में प्रसन्नता का अवसर प्रदान किया है। गुरु इंगित की आराधना करते हुए संपूर्ण धर्मसंघ को आपश्री का आध्यात्मिक पथदर्शन मिलता रहे यही सुभाशंसा।

-----------------------------

### ● मुनि मृदुकुमार ●

गुरु के कृपा प्रसाद का,
मिला सुखद आस्वाद।
नव उत्तरदायित्व से,
साध्वीगण आबाद।।

जिनसे मैं शिक्षित हुआ,
विश्रुत वैभव युक्त।
वो साध्वी विश्रुतविभा,
प्रमुखा पदे नियुक्त।।

### ● साध्वी मुक्ताप्रभा, कुसुमप्रभा ●

शासन माता की वरदपुत्री गण का सुयश शिखरों चढ़ाओ
ज्योतिचरण की कीर्ति पताका दिग् दिगन्त में फहराओ
अरूणायी हो तरूणायी हो जिनशासन में शंख बजाओ।।

कीर्तिमान रचाते गुरुवर हर दिन नये निराले अनुपम
अतिशयधारी गरिमाधारी तीर्थंकर ज्यों अनुत्तर संयम
भाग्य विधाता के सपनों को इन्द्रधनुष ज्यों सजाओ।।

जो भी करते सर्वोत्तम करते महाश्रमण का दिव्य अंदाज
साध्वी प्रमुखा पद बगसाया महागुरु का अभिनव राज
रिक्त पाट सुशोभित हो गया नया सवेरा फिर से लाओ।।

सूरज कहता साध्वी प्रमुखा तुमको तेजस्वी बनना
चंदा कहता साध्वीगण का सफल बनाओ हर सपना
नेतृत्व का नया पन्ना अक्षय आलेख तुम लिखाओ।।

धरती कहती गहन हो गंभीर हो तुम मेरी शोभा
गगन कहता विशाल हो विराट हो बढ़ाओ आभा
विश्व कहता अभ्युदय के नए पैमाने रच दिखाओ।।

क्या नया प्रतिमान रचोगे? नया प्रारूप बसा है दिल में
नव संकेत संदेश मिलते ज्योतिर्धर की इस महफिल में
श्री तुलसी का साम्ययोग साध्वी समाज को सिखलाओ।।

महाप्रज्ञ का ध्यान योग रोम-रोम में बसा तुम्हारे
आर्य भिक्षु का महायोग धमनियों में हम निहारे
प्रेक्षा की वीणा है पास अर्हम् से विजयी बनाओ।।

-----------------------------

### ● साध्वी मधुबाला ●

तेरापंथ धर्मसंघ के ९वें साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का मैं अभिनंदन करती हुं , अभिवंदन करती हुं। आचार्यप्रवर ने आपश्री पर अत्यधिक विश्वास और कृपा कर आपश्री को साध्वीप्रमुखा बनाया है। आपश्री की अपनी साधना, प्रबुद्ध व्यक्तित्व है। आपश्री के लिए मैं यही शुभकामना करती हुं कि आपश्री युगों-युगों तक धर्मसंघ की सेवा करते रहें। आपश्री के कुशल नेतृत्व में साध्वी समाज विकास की नई ऊंचाई का स्पर्श करे। आपश्री हमारी साधना समाधि का ध्यान रखते हुए शासन माता जैसे ही हमारी सार संभाल करते रहें। आपश्री के प्रति मंगल कामना।

## उत्थान कार्यक्रम का आयोजन

**अंधेरी।**

प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी के सहवर्ती संत अभिजित कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी के सान्निध्य में अंधेरी के भक्ति वेदांत स्कूल में उत्थान कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत अंधेरी तेरापंथ महिला मंडल के सुमधुर मंगलाचरण से हुई। अंधेरी सभा अध्यक्ष चैनरूप दुगड़ ने सभी पधारे लोगों का स्वागत किया।

मंगल सान्निध्य पाकर पुलकित अंधेरी समाज बहुश्रुत परिषद संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी ने समय के सही नियोजन व ज्ञानवृद्धि के लिए पुरुषार्थ पर बल दिया। उन्होंने आह्वान किया मुंबई श्रावक समाज से कि वे युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के २०२३ चतुर्मास के लिए अपनी आध्यात्मिक तैयारी करें।

**वाणी, विचार और व्यवहार से हो उत्थान :** मुनि अभिजीत कुमार जी ने बताया कि जब हम केवल भौतिक उत्थान के बारे में सोचते हैं, हमारा तनाव बढ़ता है, परंतु जब हम आध्यात्मिक उत्थान के पथ पर अग्रसर होते हैं, तो हमारा तनाव घटता है। हमें आध्यात्मिक अपग्रेड की ओर प्रस्थान करना है।

**संतुलन से तनाव का निर्मूलन :** मुनि जागृत कुमार जी ने बताया कि स्ट्रेस होना कोई बुरी बात नहीं है, व्यक्ति उसे बैलेंस करना सीखे। बिना स्ट्रेस के आलस्य आ सकता है व अधिक स्ट्रेस से डिप्रेशन में भी जा सकता है।

कार्यक्रम में वर्सोवा अंधेरी के एमएलए भारती लवेकर, कॉरपोरेटर योगीराज धाड़कर व उभरते इंडियन क्रिकेट ऑल राउंड प्लेयर शिवम दुबे इस कार्यक्रम के विशेष अतिथि रहे।

कार्यक्रम का संचालन प्रदीप बोकड़िया ने किया। मरुधर मित्र परिषद, मुंबई के अध्यक्ष अशोक सिंघवी ने सबको उत्थान से जुड़ने का आह्वान किया। सभा मंत्री शांति कोठारी व अंधेरी तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष दिनेश ने आभार ज्ञापन किया।

मुंबई सभा के पदाधिकारी व अतिथियों ने अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उत्थान की युवा टीम के प्रयास से यह कार्यक्रम सफलता से संपन्न हुआ।

मुनिद्वय ने अपने अथक श्रम से करीब २०० मंजिल चढ़ते हुए घर-घर का स्पर्श कर युवाओं में नवसंचार किया, जिसके परिणामस्वरूप करीब ४०० से अधिक संख्या में श्रावकगण ने इस अभियान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

## तप अभिनंदन समारोह

**भुवनेश्वर, उड़ीसा।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में तप अभिनंदन का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जीवन विकास के चार सूत्र हैं—सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यग् चारित्र, सम्यग् तप। तप से आत्म शक्ति का प्रवर्धन होता है। तप अध्यात्म साधना का प्राण है। तप से विवेक चेतना जागृत होती है। मुनिश्री ने आगे कहा कि जैन धर्म में तप का बहुत बड़ा महत्त्व है।

यश शांतिलाल बैद ने भीषण गर्मी में भी ८ दिनों की तपस्या करके मानो नया इतिहास रचाया है। मैं इसके मनोबल को साधुवाद देता हूँ। इस अवसर पर पारमार्थिक शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष जसराज बुरड़, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला, विरेंद्र बेताला परिवार की बहनें व कन्याओं ने गीत की प्रस्तुति दी। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मुनि परमानंद जी ने विचार रखे एवं कार्यक्रम का संचालन किया। तेरापंथ सभा की तरफ से तपस्वी का बहुमान किया गया।

PDF Compressor Free Version



# साध्वीप्रमुखा मनोनयन के अवसर पर हृदयोद्गार

## ● साध्वी राजीमती ●

यह हमारा प्रवर्धमान जैन शासन जिसमें तेरापंथ एक प्राणवान प्रतिष्ठा वाला जागृत, जीवित तथा अनुशासित धर्मसंघ है।

जिसके नेतृत्व का सम्पूर्ण अधिकार एकमात्र आचार्य के हाथ में होता है। भले युवाचार्य का मनोनयन हो या साध्वी प्रमुखा का। आचार्य भिक्षु से लेकर यह परम्परा आज तक अक्षुण्ण एवं अखण्ड रूप में चल रही है। केवल प्रमुखा पद का निर्माण श्रीमद् जयाचार्य ने किया था।

सन् २०२२ होली चातुर्मास के दिन शासन माता का महाप्रयाण गुरुदेव के मंगलपाठ को सुनते-सुनते हो गया। इस रिक्त स्थान की सम्पूर्ति का दायित्व वर्तमान आचार्य पर होता है। यह कार्य आज हजारों की उपस्थिति में सम्पन्न हो गया। आज आचार्यवर ने जैसे ही मुख्यनियोजिका विश्रुतविभाजी का नाम लिया कि आचार्यवर के प्रति सब श्रद्धा प्रणत हो गए।

हमारी नवनिर्वाचित साध्वी प्रमुखाश्रीजी समाज के लिए अपरिचित नहीं है क्योंकि तुलसी युग से लेकर आज तक किसी न किसी रूप में कार्यरत रही है। यह परिपक्व अनुभवी साध्वी प्रमुखा है इसलिए आचार्यों की सेवा में अधिक से अधिक सफल हो सकेगी।

विलक्षण दीक्षा की स्मृतियां आज ताजा हो रही है। वह अतिथि भवन (शुभम्) जिसमें आप और हम सबने १० समणीजी तथा ११ साध्वियों के साथ प्रथम चातुर्मास किया था। वह था संस्कार निर्माण का समय।

आप अनेक विशेषताओं की धनी है। विनय रुचि-समर्पण रुचि, तपोरुचि, आगम स्वाध्याय रुचि, जप-ध्यान रुचि, कलारुचि, सेवारुचि एवं वक्तृत्व, साहित्य रुचि वाली है।

मैं मंगलकामना करती हूं कि आप स्वस्थ निरामय रहती हुई आचार्यवर तथा सम्पूर्ण धर्मसंघ को अपनी विशिष्ट सेवाएं देती रहें।

लाडनूं के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ रहा है। धन्य है उस माटी को जिसने क्रमशः तीन साध्वी प्रमुखाओं का वरदान दिया है। आचार्यश्री तुलसी तो उस धरती के श्रृंगार थे ही।

आपके कार्यकाल में साध्वी समाज की गति-प्रगति आत्मोन्नयन के प्रभावी कार्यक्रम, श्रावक-श्राविका समाज की सार संभाल तथा आचार्यवर द्वारा प्राप्त आदेश-निर्देश का शतशः पालन करती हुई साध्वी समाज का गौरव बढ़ाएं। फिर एक बार मंगलं भूयात्, शुभं भूयात्।

----------------------------

## ● साध्वी सरस्वती ●

अमृत की बूंदे बरसी मोती से भर गया सागर
पा महाश्रमण आशीर्वर
झिगमिग ज्योति से ज्योतित है देखो सारा अम्बर।।ध्रुव।।

फूल-फूल पर दौड़-दौड़ कर भंवरे करते गुंजन
तेरे शुभ चरणों को छूकर, धूली बनती चंदन
तेरी पावन आभा देखे, सूरज भी जी भर-भर।

नभ से उतरी श्याम सलोनी, कुंकुम रंग बिछाए
डाल-डाल पर बैठी बुलबुल, गीत सुरंगे गाए
खूब बधाएं प्रमुखाश्री को, चंदा तारे मिलकर।

युगों-युगों तक रहो चिरायु, वर्णातीत हो जीवन
चयन दिवस पर सरस्वती का लो वंदन अभिनंदन
तेरे यश का ध्वज लहराए, देखो सात समन्दर
महाप्रज्ञ की अनुपम कृति का गौरव फैला घर-घर।

तर्ज- जहां डाल-डाल पर---

## ● शासनश्री साध्वी रतनश्री, लाडनूं ●

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण प्रवर ने अपने गहरे अनुभव एवं शुभचिन्तन के आधार पर साध्वी समाज की सुव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए संघ के सम्मुख एक तरासा हुआ एक कीमती हीरा प्रस्तुत किया, इसके लिये साध्वी समाज गुरूदेव के प्रति बहुत-बहुत आभारी है।

वह हीरा है मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी। आप आचार्य महाप्रज्ञ की कृपा पात्र, अनुभव शील विदुषी, कुशलवक्ता हैं। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं पर आपका अधिकार है। मधुरता एवं व्यवहार कुशलता आदि अनेक विशेषताएं आप मे हैं।

मुझे अत्यन्त सात्विक गौरव की अनुभूति होती है कि आचार्य श्री तुलसी की जन्मभूमि लाडनूं तथा मेरी भी जन्मभूमि पर आज तीसरी साध्वी प्रमुखा का चयन हुआ है। विशिष्ट गुणों से मंडित वर्तमान साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी को सश्रद्धा नमन, नमन, नमन।

----------------------------

## ● साध्वी कमल विभा ●

महाश्रमण की अनुपम प्रज्ञा ने, दिया संघ को नव वरदान।
साध्वी प्रमुखा तुमको पाकर, गण की बढ़ी अतुलनीय शान।।

दीक्षा हुई आपके साथ मेरी, मुझे भी गौरव है इस बात का।
काश! मैं भी होती वहां पर, अभिनंदन करती उस प्रात का।।

धीरता, गंभीरता अरु, वीरता की अनुपम तस्वीर हो।
सहज सरलता आत्मलीनता की, गण की तकदीर हो तुम।।

सच्ची विभा बन पाऊं मैं भी, ऐसा आशीर्वर मुझको दे दो।
मां तेरे चरणों की सेवा कर पाऊं, ऐसा वर मुझको तुम दे दो।।

शम, सम, श्रम की तुम हो, इस जग में अनुपम नजीर।
तेरी शासना में हरपल, 'कमल विभा' की जागे तकदीर।।

----------------------------

## ● साध्वी लब्धि प्रभा ●

अन्तहीन दे रही बधाई, हे साध्वी प्रमुखा!
रहो निरामय, बनो चिरायु, साध्वी प्रमुखा!
बनो तेजस्वी और वर्चस्वी, साध्वी प्रमुखा!
चहुं दिशि गूंजे यश कीर्ति, साध्वी प्रमुखा!
नव नव इतिहास गढ़ो तुम, साध्वी प्रमुखा!
गुरू चरणों की अमर साधिका, साध्वी प्रमुखा!
युगों युगों तक मिले शासना, साध्वी प्रमुखा!
आत्मा की सुनहरी आशफली, साध्वी प्रमुखा!
सबके मन की पीर हरो तुम, साध्वी प्रमुखा!
खाली झोली मेरी भर दो, साध्वी प्रमुखा!

## युवा दिवस कार्यक्रम

**रायसिंहनगर।**

आचार्यश्री महाश्रमण की के ४९वें दीक्षा दिवस पर तेयुप द्वारा अभातेयुप के निर्देशन में 'महाश्रमणोस्तु मंगलम्' के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया।

सभा अध्यक्ष, तेयुप अध्यक्ष सहित स्थानीय श्रावकों द्वारा कार्यक्रम में भाग लिया गया। ज्ञातव्य है कि स्थानीय स्तर से निबंध कार्यक्रम में भी श्रावकों द्वारा लेख भेजे गए हैं। तेयुप अध्यक्ष डॉ० मुकेश जैन द्वारा उपस्थित श्रावकों ने नवनियुक्त साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया और वंदना अर्पण की।

## ● साध्वी शान्तिप्रभा ●

लाडनूं का गौरव बनी तुम, छाई कण- कण में खुशाली।
मनोनयन की शुभबेला में, गण में आई आज दिवाली।।

नव निर्वाचित साध्वी प्रमुखा
तेरी यश गाथाएं
नभ-धरती में गूंज रही है
गाती दशों दिशाएं इस मीठे क्षण में अब तुम, पाओ हमको अमृत प्याली।

महाश्रमण गुरुराज ने
श्रमणी गण को दिया दिव्य वरदान
विश्रुत विभा साध्वी प्रमुखा पा
जय जयकार करें इकतान
श्रमणी गण यह बना निहाल, मिली साध्वी प्रमुखा निराली।

समता, श्रम की देवी हो तुम
ममता से गागर भरदो
साधना में मैं बढ़ूं निरन्तर
ऐसा अनुपम वर दे दो
आज मानस अतुल आनन्दित,
चमन खिला है डाली डाली।

बनो निरामय और चिरायु
अर्चा में अर्पित मन प्राण
नये नये स्वस्तिक रच डालो
पाओ जगति का सम्मान

'शान्तिप्रभा' मन शंख बजे और मंगलमय बाजे शुभ थाली

----------------------------

## ● साध्वी कनकश्री ●

नव नियुक्त साध्वीप्रमुखाजी
विश्रुतविभाजी! वर्धापना
अभिवंदना
उत्सव की बेला, अरूणिम दसों दिशाएं।
धरती मुसकाए, पवन प्रभाती गाए।।

है युग प्रधान गणनायक विभुता धारी
तप संयम, समता श्रम के अटल पुजारी।
उत्सव पंचक पर सुधा कलश छलकाएं।।

साध्वी समुदाय पर की अनुकंपा भारी
मानस उपवन की कुसुमित क्यारी क्यारी।
सक्षम सुयोग्य साध्वी प्रमुखाजी पाए।।

चंदेरी नगरी अतिशय गौरवशाली
जिसने दी दुर्लभ मणियां तीन निराली।
हैट्रिक अद्भुत लख सबके सिर चकराए।।

गुरु तुलसी भगिनी महासती लाडांजी
थी दिव्य विभूति महाश्रमणी कनकप्रभाजी।
साध्वीश्री विश्रुत विभाजी को विरुदाएं।
प्रमुखा पद पर हम ससम्मान बधाएं।।

PDF Compressor Free Version



✦ *किसी भी जाति, वर्ग, संप्रदाय का व्यक्ति हो, यहाँ तक कि नास्तिक भी क्यों न हो, अणुव्रत का द्वार सबके लिए खुला है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

# साध्वीप्रमुखा मनोनयन के अवसर पर मन के उद्‌गार

### ● साध्वी कंचनप्रभा ●

आज का मंगल प्रभात धर्मसंघ में अभिनव खुशियां लेकर आया है। युगप्रधान, भैक्षवगण सम्राट परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आपश्री का एवं साध्वी प्रमुखा पद पर मनोनयन कर पूरे धर्म संघ में शक्ति का संचार किया है, संयम एवं तप को प्रतिष्ठित किया है। साध्वी प्रमुखा पद को महिमा मंडित किया है।

साध्वी कंचनप्रभा, साध्वी मंजुरेखा, साध्वी उदितप्रभा, साध्वी निर्भयप्रभा एवं साध्वी चेलनाश्री की शत-शत बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो।

तेरापंथ प्रणेता आचार्य भिक्षु, उत्तरवर्ती यशस्वी आचार्य प्रवर परम्परा, गणाधिपति गुरूदेव तुलसी, परम पूजय आचार्य महाप्रज्ञजी का प्रत्यक्ष व परोक्ष आशीर्वाद, आप साध्वी समाज का गौरव शिखर चढ़ाते रहें।

----------------------------

### ● साध्वी पीयूषप्रभा ●

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा साध्वी प्रमुखा पद पर आपकी नियुक्ति साध्वी समाज के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आचार्य प्रवर ने आपके व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्व का समायोचित और सटीक मूल्यांकन कर साध्वी समाज को एक विशिष्ट उपहार दिया है। आपकी जागृत संयम चेतना मितभाषिता, ज्ञानाराधना और निष्पृहता अभिवन्दनीय है। मनोनयन के पावन अवसर पर हम आपकी अभिवंदना करते है। आपकी विशेषताएं साध्वी समाज में सक्रांत हो और साध्वियों के विकास के लिए नये आयाम प्रदान करती रहें। गुरु दृष्टि की आराधना करती हुई आर्यप्रवर के विश्वास को सफल बनाती रहे प्रसन्नता के इन मंगल क्षणों में हम आपकी वर्धापना करते हैं।

----------------------------

### ● साध्वी सरोज ●

परमवंदनीया आदरणीया हमारे नवनिर्वाचित साध्वीप्रमुखाश्रीजी के चरणों में वर्धापना, वंदना अभिवंदना।

मैं दीक्षित हुई तब से बहिन कमला-माणक के वैरागी त्यागी जीवन से परिचित हुई। साध्वी चन्द्रलेखाजी और साध्वी सोमप्रभा से आपके परिवार से अधिक निकट हुई हूं।

आज का दिन स्वर्णिम दिन है। हम साध्वियों के लिए अन्तर्यामी गुरुदेव ने हमारे दिलों की आवाज सुनी। आपको साध्वीप्रमुखाश्रीजी के रुप में सुशोभित किया। हमारी संयम साधना की संभाल का उत्तरदायित्व दिया।

मैं दीक्षित हुई। मातृहृदया साध्वीप्रमुखा लाडांजी ने वत्सलता दी। बाद में शासन माता की प्रेरणा ने मुझे आगे बढ़ाया। मैं अपने आपको भाग्य-शाली मानती हूं जिन्होंने अपने प्रत्येक श्वास को संघ एवं संघपति के निर्देशानुसार संयम साधना में समर्पित कर रखा है।

ऐसी परिचित साध्वी को यगुप्रधान त्रय आचार्यों का विश्वास मिला है। अब वे मेरे भावी विकास एवं सफलता में सहयोगी बनेगी। इसी विश्वास के साथ-

✦ *जो समय बीत गया, वह वापस नहीं आता। इसलिए उसे पीछे से नहीं, आगे से पकड़ने का प्रयत्न करना चाहिए तथा उसका सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए।*

✦ *अपना घर भरने के लिए व्यापार के माध्यम से लोभवश किसी के साथ धोखा करना गलत होता है।*

**– आचार्यश्री महाश्रमण**

### ● साध्वी जिनरेखाजी ●

सतिशेखरे!

आज परमपूज्य गुरूदेव ने धर्मसंघ को एक विशेष उपहार दिया है। आज का स्वर्णिम प्रभात नई किरणों के साथ उदित हुआ है। पूरे धर्मसंघ में दीक्षा दिवस के उत्सव की आभा मनोनयन की विभा से निखर रही है। संघ की नौंवी साध्वी प्रमुखा श्री के स्थान में आपका चयन प्रसन्त्तादायी है।

महासतिवरे!

आप गुणों की भंडार है। आपकी प्रतिभा, पुरूषार्थ, धैर्य व सहनशीलता अनुकरणीय है। हम साध्वियों की देखभाल करते हुए आप हममें भी उन गुणों को संप्रसित करावें। यही मंगल कामना है शासन को दीर्घकाल तक आपकी सेवाओं से उपहृत करते हुए आप आचार्य वर के सपनों में नवरंग भरें।

आज बधाएं मंगल गाएं अभिनंदन कर हर्षाएं।
उदित हुई यह भोर सुहानी, पुलकित दशों दिशाएं।।

----------------------------

### ● साध्वी सुप्रभा, साध्वी वृंद ●

१५ मई का दिन। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का ४९वां दीक्षा दिवस। पूरे तेरापंथ धर्मसंघ में खुशियों का वातावरण। सूर्योदय के साथ आचार्य प्रवर की एक उद्‌घोषणा ने सबकी खुशियों को और अधिक वृद्धिगंत कर दिया। तेरापंथ की साध्वी प्रमुखाओं के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा था। सबकी निगाहें इस नूतन नयनाभिराम नजारे को निहारने के लिए उत्सुक हो रही थी। पूरा धर्मसंघ सरदारशहर में आने वाले उन इतिहास सर्जक पलों का इंतजार करने लगा।

कुछ घण्टों पश्चात् इंतजार की घड़ियों ने विराम लिया। पूज्यप्रवर के मुखारविंद से तेरापंथ धर्मसंघ की नवम् साध्वीप्रमुखा का नाम सुनते ही पूरे धर्मसंघ में खुशियों की लहर आ गई। आपश्री को चारों ओर से शुभकामनाएं प्राप्त होने लगी। हमारा मन भी प्रसन्न व प्रमुदित है। हम सभी साध्वियां दूर स्थित ही आपको धर्मसंघ की शुभकामनाएं प्रेषित करती हैं व आपश्री का तेरापंथ धर्मसंघ की नवम् साध्वीप्रमुखाश्री के रूप में हार्दिक स्वागत व अभिनंदन करते हैं।

आपश्री के प्रति यही मंगलकामना करते हैं कि आप स्वस्थ रहते हुए दीर्घकाल तक हम सबको दिशा-निर्देश देती रहें और आपश्ष के प्रेरणा नीर से सिंचन पा हम सबका साधना रूपी बाग पुष्पित और पल्लवित होता रहे।

पुनश्च अनंत-अनंत शुभकामनाएं

----------------------------

### ● साध्वी चेलनाश्री ●

वर्धापन की पावन वेला सविनय शीष झुकाते हैं।
खुशियों से भीगा मधुमास पाकर हरपल हरसाते हैं।।

नंदनवन भैक्षवशासन में पाया, गणमाली का साया।
तुलसी महाप्रज्ञ की नजरों में समाई अद्‌भुत आपकी छाया।
महाश्रमण नेतृत्व शुभंकर, हरपल मोद मनाते हैं।।

दीक्षोत्सव की पावनवेला गुरुवर ने मनोनीत किया नवम पद पर।
पछेवड़ी रजोहरण प्रदान करके सम्मान दिया साध्वीप्रमुखा पद पर।
श्रमणीगण शृंगार बनी तुम, देख देख मुस्काते हैं।।

बौद्धिक स्फुरणा से प्रतिपल नित नए छंद रचाए।
विनय नम्रता समर्पण से अप्रमत्तता का आदर्श दिखाए।
अभिनव है तव जीवन शैली, प्रेरक गीत गाते हैं।।

शासनमाता की सन्निधि में, सुंदर जीवन पथ लहराया।
वैराग्य विवेक की चादर ओढ़कर जीवन का हरपल सजाया।
तप त्याग की बलिवेदी पर बढ़ते इन कदमों को हम बधाते हैं।।

### ● साध्वी परमयशा, साध्वी विनम्रयशाजी ●

चंदेरी की राजदुलारी मुख्य नियोजिका कहलाएं
महातपस्वी महाश्रमण साध्वी प्रमुखा पद बगसाएं
वंदे गुरुवरम् वंदे शासनम्

मोदी कुल में  जन्म लिया परिवार ने दिया वरदान
दड़े पर है घर सुहाना भरती रहो सदा उड़ान
मात तात भ्राता भगिनी के संस्कारों से हो महान
मंगल गाएं हर्ष मनाएं भिक्षु शासन हरसाएं।।

नवमासन से पायी दीक्षा मिला वात्सल्य अनपार
दसमासन की शासना में शिक्षा समीक्षा पाया सार
एकदशवें अनुशास्ता ने बरसायी है अमृत धार
गुरु इंगित आकार से तेरापंथ का गौरव गाएं।।

शासनमाता महाश्रमणी की आराधी दृष्टि पावन
अमूल्य रत्नों को बटोर झोली भरली मनभावन
सबको चित्त समाधि का उपहार मिले दो आश्वासन
सौम्य शासना बने शुभंकर स्वस्तिक अक्षत है लाएं।।

विनम्रता कैसी हो सीखें नव नियुक्त प्रमुखाजी से
सहिष्णुता कैसी हो सीखें नव नियुक्त प्रमुखाजी से
समर्पण कैसा हो सीखें विश्रुत विभा प्रमुखाश्री से
ज्ञानी ध्यानी स्वाध्यायी शासन सुमेरू बन जाएं।।

समणश्रेणी में पहली नियोजिका के पद से गौरवान्वित
विदेशों में की पहली यात्रा जिनशासन या हर्षान्वित
मुख्य नियोजिका पद से तेरापंथ शासन रोमांचित
नवम् साध्वी प्रमुखाश्री से संघ समूचा महकाएं ।।

नए-नए इतिहास रचाओ शुभ भविष्य हो शासन का
स्वागत अभिनंदन की बेला उत्सव है वर्धापन का
साध्वीगण को खुशियां बांटो स्वर्णिम दिन सम्मान का
आश हो विश्वास हो अब नव उन्मेष दिखलाएं।।

----------------------------

### ● साध्वी सोमप्रभा ●

खुशियां तन मन में हर्षाई।
साध्वी प्रमुखा मनोनयन पर देते सभी बधाई।।

जन्म आपका चंदेरी में मोदी आंगन में खेली।
मात तात सद्‌संस्कारों की धार्मिक छवि अलबेली।
पुष्ट हुई वैराग्य भावना, भाग्य लता लहराई।।

गुरु तुलसी से दीक्षित शिक्षित स्मित प्रज्ञा बनी समणी।
साध्वी विश्रुत विभा से मुख्य नियोजिका जी मनहरणी
दशमेश महाप्रज्ञ गुरुवर ने अमृत वर्षा बरसाई।।

तीन-तीन गुरुओं की सेवा, अवसर मिला सुनहरा।
गुरु इंगित आराधन से ही विश्वास जमाया गहरा।
महाश्रमण गुरु जन्मभूमि में अद्‌भुत छटा लगाई।

विनय समर्पण सहनशीलता से जीवन चमकाया।
ज्योतिचरण ने मनोनयन कर, परिकर मान बढ़ाया
करे कामना हम सब मंगल, बाजे यश शहनाई।।

करो शासना युग-युग सुभगे! प्रकटी वर पुण्याई।
काश! पास हम भी होते? करना अब भरपाई।
कलरव करे खुशी से पंछी, आशाएं इठलाई।।

PDF Compressor Free Version



**षष्टीपूर्ति पर अभिवंदना**

## साधना के उत्तुंग पुरुष अलौकिक व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री महाश्रमण

❐ साध्वी मल्लिकाश्री ❐

तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित अनुशासित एवं प्राणवान धर्मसंघ है। जिसकी अतुल-अमाप्य यशगाथा शिखरी ऊँचाइयों का स्पर्श कर रही है। इस धर्मसंघ की यशस्वी आचार्य परंपरा बहुत भव्य एवं आकर्षक है।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी अतुलनीय व्यक्तित्व के धनी, दो-दो महान आचार्यों द्वारा तराशी गई, अनेक कसौटियों से निखारी गई अनुपमेय एवं महनीय कृति है। अल्पवय में ही गुरुद्वय के प्रति अत्यंत विनम्रता, पूर्ण-समर्पण भाव, सेवा-भावना, कार्यक्षमता आदि विरल विशेषताएँ अद्वितीय थीं।

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने आपके प्रखर व्यक्तित्व एवं कुशल कर्तृत्व का तथा पूर्ण समर्पण भाव का उल्लेख करते हुए फरमाते थे कि 'महाश्रमण' बहुत भला है और बहुत विनम्र है, सरल है, हर कार्य में जागरूक है। सचमुच! साधु हो तो ऐसा हो। आपश्री की अप्रमत्तता का अंकन करते हुए 'योगक्षेम' वर्ष में आपको 'महाश्रमण' पद पर अलंकृत किया।

**बाह्य व्यक्तित्व :** गौरवर्ण, मंझला कद, प्रलंब कान, चमकती आँखें, झलकता भाल, मुस्कान भरा चेहरा, दैदीप्यमान आभामंडल आदि आपश्री के चुंबकीय आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर हर दर्शक अध्यात्म के आनंद में सरावोर हो जाता है और वह सदा के लिए अध्यात्म के रंग में रंग जाता है।

आपश्री का अंतरंग व्यक्तित्व भी बहुत आकर्षक एवं शिखरी ऊँचाइयों को छूने वाला है। चंद्रमा सी निर्मलता, सूर्य सी तेजस्विता, सागर की गंभीरता, पापभीरूता, निर्लिप्तता, सहनशीलता, पंचाचार की साधना के प्रति पूर्ण जागरूकता, समय-नियोजन आदि विरल विशेषताओं से उभरा विराट व्यक्तित्व जन-जन की चेतना को आकर्षित कर रहा है।

**उच्च कोटि के महान साधक :** आप तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अनुशास्ता होने पर भी उच्च कोटि के महान साधक हैं। अध्यात्म जगत के गूढ़तम रहस्यों के व्याख्याता ही नहीं अपितु उन्हें आपने अपने जीवन में आत्मसात भी किया है। जो आपश्री के जीवन-व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिपात हो रहे हैं। हजारों की भीड़ में भी आचार्यप्रवर की मस्त फकीरी हर मानव को प्रभावित कर रही है।

**प्रवचन शैली का अद्भुत कौशल :** आपका प्रवचन कौशल भी अद्भुत है। आगमिक सूक्तों के साथ बौद्धादि धर्मग्रंथों के तुलनात्मक रहस्यों के पृष्ठ भी अनावृत्त होते हैं। युगीन समस्याओं से संक्रांत जन-जन भी आपकी अमृतमयी वाणी (उपदेशों) से आनंदानुभूति आकंठ डूब जाता है। सचमुच! जहाँ कथनी-करनी में समानता होती है वह प्रवचन स्वतः प्रभावशाली होता है।

**अनुशासन कौशल : 'संघे कुशल आचार्य' :** जो संघ शासना में कुशल होता है वही आचार्य सक्षम माना जाता है। आपश्री संघ की सारणा-वारणा में बहुत निष्णात है। आपकी कुशल अनुशासना से पूरा धर्मसंघ बहुत प्रसन्न एवं आनंदित है। धर्मसंघ के सर्वोच्च पद आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित होने पर भी आपकी विनय-वृत्ति बहुत ही आकर्षक और मनमोहक है। जिसका नजारा उग्र-विहारी बनकर दिल्ली पधारकर जब 'शासनमाता' को आपने दर्शन दिए तब उठ-बैठकर नीचे धरती पर बैठकर वंदना करना एक छोटे बच्चे की तरह यह दृश्य देखकर प्रत्यक्ष-परोक्ष देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के मुँह से एक ही स्वर—तेरापंथ संघ के सर्वोच्च-पद पर आसीन आचार्यप्रवर के जीवन में विनम्रता का उत्कृष्टतम् उदाहरण देखा जा सकता है।

अंत में युगप्रधान आचार्यप्रवर के षष्ठीपूर्ति के सुअवसर पर अंतः दिल से हार्दिक शुभकामनाएँ, मंगलकामनाएँ समर्पित।

आपश्री का स्वास्थ्य निरामय रहे। आपश्री की कुशल अनुशासना में संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ युगों-युगों गौरव-वृद्धि करता रहे, इसी अंतर के पवित्र श्रद्धा भावों का गुलदस्ता श्रीचरणों में अर्पित।

**तुम जीओ हजारों साल,**
**साल के दिन हो कई हजार।**
**दिवस का उत्तरार्ध पूर्वार्ध**
**अंतहीन पाए विस्तार।।**

## युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति

● साध्वी त्रिशला कुमारी ●

आज बधाएँ, तिलक लगाएँ, महाश्रमण गणताज है।
दसों दिशाएँ, मंगल गाएँ, तुम पर हमको नाज है।। आं।।

धन्नधस सरदारशहर की माँ नेमा मन हरसाई।
झूमरकूल के ध्रुवतारे की महिमा चिहुंदिश में छाई।
सहज सर्पण, ऋजुता, मृदुता से गुरुवर दृष्टि पाई।
मोहन से मुनि मुदित महाश्रमण की यात्रा वरदाई।
महातपस्वी के चरणों में नतमस्तक सकल समाज है—

नई सदी के महासूर्य का करता गण सम्मान है।
तेरापंथ के शुभ भविष्य पर हम सबको अभिमान है।
जिस सूरत को श्री तुलसी ने अपने हाथ संवारा है।
प्रज्ञ की शैली ने जिसको गुरु ने खूब निखारा है।
वह व्यक्तित्व सभी से सुंदर लगता प्यार-प्यार है।
सदा चलेंगे साथ तुम्हारे तारण-तरण जहाज है---

भैक्षव शासन बगिया चमके महाश्रमण अवदानों से।
एक नया इतिहास बनेगा अभिनव कीर्तिमानों से।
जय-जय नंदा जय-जय गूँजे मंगल गीत है।
सदा बढ़ेगी शोभा गण की सबको पूर्व प्रतीत है।
महाश्रमण का पाया साया खुशियाँ बे अंदाज हैं।

**लय : आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ---**

## युवा दिवस कार्यक्रम

**हासन।**

तेरापंथ सभा भवन में सकल जैन समाज ने अभातेयुप के तत्त्वावधान में हासन तेयुप द्वारा युवा दिवस के रूप में मनाया। सकल श्वेतांबर जैन समाज ने इसमें भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया। ५० सामायिक साधना हुई, ममता कोठारी ने युवा दिवस पर पच्चीस बोल, त्याग का महत्त्व समझाया।

कार्यक्रम में सभी जैन श्वेतांबर समाज के अध्यक्ष-मंत्री की उपस्थिति रही।

## संतों के प्रवास से सभी लाभ उठाएँ

**भुवनेश्वर।**

मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी एवं मुनि जिनेश कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन तेरापंथ भवन में हुआ। आध्यात्मिक मिलन के अवसर पर भुवनेश्वर, कटक आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे। आध्यात्मिक मिलन समारोह मुनि डॉ० ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि साधु-साध्वियाँ जब भी आएँ श्रावक समाज का फर्ज है कि वे उनकी सेवा-उपासना करें। चारित्र वंदनीय होता है। चारित्र युक्त संत समाज से कुछ लेने के लिए नहीं अपितु देने के लिए आते हैं। मुनि जिनेश कुमार जी आदि संतों से मिलकर खूब प्रसन्नता हुई।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा संतों से सर्वोदय और भाग्योदय होता है। संत व्यक्ति के पाप, ताप, उत्ताप, संताप का हरण करने वाले होते हैं। आज वरिष्ठ संत डॉ० मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी से मिलकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ज्ञानी संत हैं। वे तपस्वी व साधक हैं। सभी को संतों के प्रवास का खूब लाभ उठाना है।

इस अवसर पर डॉ० मुनि विमलेश कुमार जी, मुनि पदम कुमार जी ने प्रासंगिक विचार व्यक्त किए। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम पर तेरापंथी महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, तेयुप मंत्री दीपक सामसुखा, तेममं अध्यक्षा मधु गीड़िया, वरिष्ठ श्रावक मंगलचंद चोरड़िया, तेरापंथ सभा कटक के सहमंत्री मुकेश डूंगरवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। तेममं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

-----------------------

## आध्यात्मिक मिलन समारोह

**चलथान।**

मुनि उदित कुमार जी स्वामी का आध्यात्मिक मिलन साध्वी सम्यक्प्रभाजी के साथ तेरापंथ भवन, चलथान में हुआ। मुनि उदित कुमार जी स्वामी सूरत चातुर्मास के लिए ११०० किलोमीटर का विहार कर चलथान पधारे। जहाँ मुनिवृंद का आध्यात्मिक मिलन साध्वी सम्यक्प्रभाजी से हुआ। आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम में तेरापंथ महासभा सहमंत्री अनिल चंडालिया एवं सगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया की विशेष उपस्थिति रही।

इस अवसर पर सूरत, उधना, पर्वत पाटिया, किम, कामरेज, बारडोली, नवसारी, पलसाना, चिखली, लिंबायत एवं अनेक क्षेत्र से लगभग २५० श्रावक-श्राविकागण उपस्थित रहे।

मुनि उदित कुमार जी स्वामी एवं साध्वी सम्यक्प्रभाजी द्वारा उपस्थित श्रावक समाज को मंगल उद्बोधन दिया गया। महिला मंडल, चलथान द्वारा मंगलाचरण के साथ ही कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष दिनेश बाबेल द्वारा पधारे सभी महानुभाव का स्वागत-अभिनंदन किया गया। महासभा संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया, तेरापंथ सभा, चलथान के वरिष्ठ श्रावक तेजमल नौलखा, ज्ञानशाला के बच्चों, नरपत कोचर द्वारा इस आध्यात्मिक मिलन बेला पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी गई। साध्वीश्रीजी द्वारा सामुहिक गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन ज्ञान दुगड़ ने किया।

## अणुव्रत की प्रासंगिकता

**जयपुर।**

अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा भिक्षु साधना केंद्र में टीपीएफ के साथ मिलकर तेरापंथ प्रोफेशनल्स के लिए अणुव्रत की प्रासंगिकता पर मुनि सुमति कुमार जी के सान्निध्य में, प्रस्तुत विषय पर कार्यक्रम किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमोकार मंत्र के साथ हुई।

मुनि राहुल जी ने गीतिका प्रस्तुत की। टीपीएफ, जयपुर के अध्यक्ष संदीप जैन ने सभी का स्वागत किया तथा अणुव्रत की प्रासंगिकता के बारे में बताया। छोटे-छोटे व्रतों की पालना से मनुष्य जीवन में काफी बदलाव लाया जा सकता है। मुनि देवार्य जी ने अणुव्रत का संक्षिप्त परिचय दिया।

मुनि सुमति कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत का धर्म साधु और श्रावक दोनों का ही धर्म है। हमें विवेक को जागरूक रखते हुए अनावश्यक हिंसा से बचने का उपाय सोचना चाहिए।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा द्वारा किया गया। संदीप भंडारी तथा सिद्धा ने अणुव्रत प्रबोधन पुस्तक तथा प्रश्नावली मुनि सुमति कुमार जी को भेंट की। यह पुस्तक शासनमाता साध्वी कनकप्रभाश्री जी द्वारा रचित है। कार्यक्रम का संचालन डॉ० अमित बैंगानी ने किया।

PDF Compressor Free Version



✦ हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# आचार्यश्री तुलसी की २६वीं पुण्यतिथि पर विशेष

## कालजयी व्यक्तित्व - आचार्य तुलसी

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

इतिहास के पृष्ठों पर कुछ विरल व्यक्तित्वों के नाम अंकित होते हैं, जिन्हें कालजयी व्यक्तित्व के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है, क्योंकि उनके कार्य कालजयी होते हैं। समय के भाल पर उनके कार्य सदैव अंकित रहते हैं। ऐसे में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी का नाम भारतीय इतिहास में दुर्लभ दस्तावेज के रूप में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। लगभग ६० वर्षों के प्रलंब आचार्यकाल में न केवल जैन तेरापंथ अपितु मानवता की सेवा में अभूतपूर्व अवदान दिए, जिनकी सौरभ भू-मंडल पर आज भी सुरक्षित है। जिन्हें मानवता के मसीहा के रूप में याद करते हैं। वे एक ऐसे ही विलक्षण प्रतिभावान आचार्य थे। इतिहास में खोजने पर ऐसे व्यक्तित्व का मिलना दुर्लभ कहा जा सकता है। लाखों-लाखों लोग उनकी सन्निधि में आकर बुराइयों को त्यागकर अपने आपमें स्वस्थ बनें, आश्वस्त बनें, विश्वस्त बनें। विभिन्न जाति, समाज, संप्रदाय के लोग तथा राजनेता बिना किसी भेदभाव के उनके चरणों में आते रहें, क्योंकि उनके द्वारा चलाया गया अणुव्रत आंदोलन जाति, वर्ग, वर्ण एवं संप्रदाय से मुक्त था। उन्होंने भगवान महावीर की अहिंसा को जैन धर्म की परिधि से बाहर निकालकर सार्वभौम व सार्वजनीन बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने धर्म संदेश में नैतिकता, प्रामाणिकता व ईमानदारी को जीवन में स्थान देने हेतु प्रयास किया। उनके विचारों में धर्म धर्मस्थानों में नहीं बल्कि जीवन में आए, वह केवल पूजा उपासना का ही नहीं आचरण में आए तभी उसकी सार्थकता होगी।

यद्यपि तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है। इस धर्मसंघ में आचार्य की अनुशासना सर्वोपरि है। संघ के प्रत्येक सदस्य में विनम्रता, सेवा निष्ठा, संघनिष्ठा, आचारनिष्ठा, मर्यादा निष्ठा, आचार्यनिष्ठा के भाव परिलक्षित किए जा सकते हैं। स्वयं आचार्य भी संघ के प्रत्येक सदस्य को सेवा, शिक्षा, स्वास्थ्य की दृष्टि से हर संभव सहयोग प्रदान करवाते हैं। स्वयं आचार्यश्री तुलसी ने धर्मसंघ के आंतरिक विकास को महत्त्व दिया, किंतु साथ में मानवीय हितों को ध्यान में रखते हुए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अहिंसा समवाय, नया मोड़, रूढ़ि उन्मूलन, साहित्य-सृजन आदि जन-कल्याणकारी कार्यों के द्वारा देश व दुनिया का पथ-दर्शन किया। मानवीय हितों के संदर्भ में आज भी उनको याद किया जा रहा है।

उनकी २६वें पुण्यस्मरण के संदर्भ में आज भी राजनेता, समाज-नेता, विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु तथा आमजन भी उनके प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित करते हैं। ऐसे महामानव शताब्दियों में कभी-कभार ही आते हैं। जो व्यक्ति-व्यक्ति के दिलों में उतर जाते हैं, जिनको देश औरदुनिया श्रद्धा से याद करती है। आज उनकी ही कृति ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण उन्हीं के पदचिह्नों पर चलते हुए जन-जन में नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का संदेश लेकर पूर्वी भारत, दक्षिण भारत, मध्य भारत तथा नेपाल व भूटान सहित लगभग बीस हजार किलोमीटर की पदयात्रा की। उनकी अहिंसा यात्रा की अनुगूँज सर्वत्र सुनाई दे रही है। यह ऐसा धर्मसंघ है जो अपनी आत्म साधना करता हुआ भी मानवता की सेवा में समर्पित है। आज मैं अपने आराध्य आचार्य श्री तुलसी की २६वीं पुण्यतिथि पर सर्वात्मना समर्पण भाव से श्रद्धा समर्पित कर धन्यता की अनुभूति करता हूँ। उनके आशीर्वाद से स्वयं के चैतन्य जागरण के साथ धर्मसंघ व मानवीय सेवा के लिए समर्पित हूँ। इसी शुभ मंगलभावना के साथ पुनः-पुनः गुरुवर के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित!

## सत्यं शिवं सुंदरम्

● शासनश्री साध्वी यशोधरा ●

बीसवीं सदी के भारतीय धर्मपुरुषों में आचार्य तुलसी का अप्रतिम स्थान है। वे तेरापंथ धर्मसंघ के शलाका पुरुष हैं। उनका संपूर्ण जीवन लोकमंगल के लिए समर्पित था। सत्यं शिवं सुंदरम् के वे मूर्तरूप थे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी किसी व्यक्ति का वाचक नाम नहीं है, किंतु धर्म की व्यापक अवधारणा का प्रतिनिधि है। 'वाचनाप्रमुख आचार्य तुलसी' यह नाम विशाल ज्ञानराशि का प्रतिनिधि है। उन्होंने जो कहा—वह श्रुत बन गया। जो लिखा वह वाङ्मय बन गया। उनका व्यक्तित्व आकाश की भाँति अमाप्य है। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा के शब्दों में आचार्यश्री का कर्तृत्व धरती से उदित होकर आकाश तक पहुँच गया है। अनवरत यात्रा का नाम है—आचार्य तुलसी। लाखों लोगों के श्रद्धेय वंदनीय, अर्चनीय होने पर भी वे स्वयं को मानव ही मानते हैं। दक्षिण यात्रा में जब उन्हें पूछा जाता, आप कौन हैं? उनका सहज उत्तर होता—'मैं एक मानव हूँ फिर धार्मिक, जैन, तेरापंथ का आचार्य---

मानव को सही मानव बनाने के लिए ही उन्होंने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। इसके माध्यम से सफल धर्मक्रांति की। ग्वालियर से एक संघ ने गुरुदर्शन किए। परिचय गोष्ठी हो रही थी। एक पत्रकार ने कहा—आचार्यजी! मैं जैन नहीं हूँ। प्रतिप्रश्न करते हुए आपने कहा—गुडमेन तो हैं? गुडमेन बन गए तो फिर जैन, बौद्ध, इस्लाम आदमी आदमी ही नहीं है तो ये धार्मिक लेबल औरों को ही नहीं अपने आपको धोखा देना है।

धर्म को व्यापक बनाकर उसे सत्य के आसन पर आसीन किया है। धर्म की विकृतियों पर प्रहार करते हुए उन्होंने धार्मिकों को चेतावनी दी। 'इस वैज्ञानिक युग में ऐसे धर्म न चल पाएँगे। केवल रूढ़िवाद पर जो चलते रहना चाहेंगे।' उनका यह उद्धरण विचारोत्तेजक है—'भले ही आप वर्ष भर में धर्मस्थान में न जाएँ, मैं इसे क्षम्य मान लूँगा। बशर्ते कि आप कार्य क्षेत्र को ही धर्मस्थान बना लें, मंदिर बना लें।' इसीलिए उन्होंने ग्रंथों, पंथों से निकालकर प्रेक्षाध्यान के माध्यम से धर्म का प्रायोगिक रूप जनता के सामने प्रस्तुत किया। जिससे हजारों-लाखों लोगों ने तनावमुक्त जीवन जीने का व आदतों को बदलने का अभ्यास किया है।

इस प्रसंग में वे धार्मिकों से प्रश्न करते हैं—व्यापार में जो अनैतिकता की जाती है, क्या वह मेरी प्रशंसा मात्र से धुल जाने वाली है? दिन भर की जाने वाली ईर्ष्या, आलोचना एक-दूसरे को गिराने की भावना का पाप, क्या मेरे पैरों में सिर रखने मात्र से साफ हो जाएँगे? ये प्रश्न मुझे बड़ा बेचैन कर देते हैं।

भगवान् का चरणामृत लेने वाले आज बहुत मिल सकते हैं। उनकी सवारी पर फूल चढ़ाने वालों की भी कमी नहीं है। पर भगवान के पथ पर चलने वाले कितने हैं?

उन्होंने धर्मक्रांति का सिंहनाद कर धार्मिकों की सुप्त चेतना को झकझोरा है। धर्म को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा—'मेरे धर्म की परिभाषा यह नहीं कि आपको तोता रटन की तरह माला फेरनी होगी। मेरी दृष्टि में आचार, विचार और व्यवहार की शुद्धता का नाम धर्म है।'

जहाँ लाखों-लाखों लोग उन्हें एक जैन मुनि, तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अधिशास्ता के रूप में जानते पहचानते हैं। श्रद्धा-समर्पण कर अपने आपको कृतार्थ मानते हैं। वहाँ करोड़ों-करोड़ों व्यक्तियों की नजर में उनका व्यक्तित्व मानवता के मसीहा, मानव धर्म के प्रवर्तक, युगद्रष्टा, मानवीय संवेदना के सजग प्रहरी, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के पुनः प्रतिष्ठापक के रूप में उभरा है। संपूर्ण मानव जाति के उदितोदित मंगल भविष्य के लिए वे अत्यंत संवेदनशील हैं। इसीलिए वे व्यक्ति से लेकर विश्वजनीन समस्याओं के संदर्भ में न केवल सोचते हैं परंतु उनका समुचित समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। हजारों-हजारों किमी की कोलकाता से कच्छ, पंजाब से कन्याकुमारी तक की उनकी पदयात्राएँ जन-जागरण का सघन अभियान था।

शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय उनका महान अवदान है। आचार्य तुलसी एक अमरगाथा हैं युग सृजन की। प्रबल प्रेरणा है जन जागरण की। उनके अवदानों की लंबी शृंखला है। उनके अनंत उपकारों के प्रति कृतज्ञता शब्द बहुत बौना पड़ जाता है। महाप्रयाण की २६वीं पुण्यतिथि पर अंतहीन श्रद्धासिक्त नमन, वंदन, अभिवंदन, भावभीनी श्रद्धांजलि।

## अर्हम

● साध्वी ऋजुयशा ●

वदनानंदन दे दो दर्शन, मत तरसाओ मेरे भगवन।
कर दो मेरी आशा पूरण, तुम ही हो मेरी दिल धड़कन।।

तुम दूज चाँद बनकर आए, सारी दुनिया पर तुम छाए,
जन-जन करता तेरा अर्चन।। मत तरसाओ---

चहरे पर तेज दमकता था, नयनों से नेह बरसता था,
चुम्बक-सा अद्भुत आकर्षण।।

तुमने कितनों को ज्ञान दिया, कितनों का ही निर्माण किया,
कितनों ने पाया संयम धन।।

तुमने कितने अवदान दिए, कितने-कितने संधान किए,
तूने चमकाया गण गुलशन।।

तुम श्रम के परम पुजारी थे, तुम सचमुच उग्रविहारी थे,
रोमांचक तब यात्रा वर्णन।।

'मेरा जीवन-मेरा दर्शन', भरता प्राणों में नव पुलकन,
निखरो निज कृति का संपादन।।

है अधर-अधर पर नाम तेरा, सब कहते तुलसी राम मेरा,
श्रद्धानत मैं चरणों शत वंदन।।

लय : हमने जग की अजब तस्वीर देखी---

---

## अर्हम

● डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा ●

तुलसी-तुलसी जप से होता घट-घट में उजियाला।
तुलसी की फेरूँ माला।।

भिक्षु शासन में तुलसी युग स्वर्णिम युग कहलाया।
जो भी आया निकट तुम्हारे वत्सल रस बरसाया।
शरणागत को बड़े प्रेम से मात-पिता ज्यों पाला।।

नया मोड़ अभियान बनाया नारी शक्ति जगाई।
दीक्षा से पहले शिक्षा हो, बना प्रबंध वरदाई।
समण श्रेणी का किया प्रवर्तन साहस बड़ा निराला।।

अणुव्रत वाले तुलसी बाबा जग विख्यात कहाए।
मानवता का पाठ पढ़ा अच्छे इंसान बनाए।
तारणहारा रहा तारता वह तुलसी मतवाला।।

अमर बनी हैं जग में अवदानों की अनुपम कृतियाँ।
सद्संस्कार दिए जो गण को पल पल ताजा स्मृतियाँ।
गण विकास हित बाँटा जीवन भर शिक्षामृत प्याला।।

लय : वह भारत देश है मेरा---

PDF Compressor Free Version



# आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, पटोत्सव एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

## श्रद्धानिष्ठ आचार्य का एक नाम है - आचार्य महाश्रमण

**गंगाशहर।**

तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमण जी के १३वें पट्टोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह में शासनश्री साध्वी शशिरेखाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन का हर क्षण रोशनी से भरा हुआ है। जिनके जीवन का हर दिन मैनेजमेंट का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, हर माह सृजन की नई कहानी है। ऐसे आज्ञानिष्ठ, संयमनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ आचार्य का एक नाम है—आचार्य महाश्रमण।

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन-यात्रा की चर्चा करते हुए कहा कि मोहन से मुदित और मुदित से महाश्रमण बनने के लिए न जाने आपको कितनी बार अनुशासन रूपी अग्नि में तपना पड़ा। तब कहीं जाकर आज हम सबके शिरमौर बने। साध्वी सूरजप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व निराला है। जिन्हें सूरज, चंद्रमा और सागर की उपमा से उपमित किया जा सकता है।

साध्वी पूनमप्रभाजी ने मुक्तक, साध्वी जागृतयशाजी ने गीत व साध्वी सोमश्रीजी ने वक्तव्य के माध्यम से अपने विचार रखे। साध्वी शीतलयशाजी, साध्वी कांतयशाजी आदि साध्वियों ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी लावण्ययशाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति के मनोज छाजेड़ द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी, तेममं की मंत्री कविता चोपड़ा, तेयुप के अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी जयेश छाजेड़, मीनाक्षी सामसुखा ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

## युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की षष्टीपूर्ति अभिवंदना समारोह

**गुवाहाटी।**

तेरापंथी सभा द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की षष्टीपूर्ति अभिवंदना समारोह का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभा उपाध्यक्ष दिलीप दुगड़ ने कहा कि महाश्रमण गुणों की खान है। इनके गुणों को प्रस्तुत करना सूर्य को दीपक दिखाना है।

हम सभी आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४९वाँ दीक्षा दिवस मना रहे हैं। इस अवसर पर सभाध्यक्ष झंकार दुधोड़िया, मंत्री निर्मल सामसुखा, महिला मंडल मंत्री सुशीला मालू, टीपीएफ अध्यक्ष रामचंद्र संचेती, अणुविभा के असम प्रभारी व अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष बजरंग बैद ने अपने भावों को व्यक्त किया। अर्हम भजन मंडली ने गीत के द्वारा गुरुदेव के प्रति मंगलभावना व्यक्त की।

## गुरु दृष्टि एवं संयम से बने युगप्रधान महाश्रमण

**कांटाबाजी।**

युगप्रधान महाश्रमण जी का ४९वाँ जन्मदिवस पर आयोजित महाश्रमणोस्तु मंगलम् भक्ति संध्या पर जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि दीक्षा लेने पर विकास के रास्ते खुलते हैं। व्यक्ति दीक्षित होने के बाद कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दीक्षा ली, संयम की साधना की, गुरुदृष्टि की आराधना करके आज संघ के आचार्य बन गए। दीक्षा लेने वाले के अंतराय देने से बहुत पाप कर्म का बंधन हो जाता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। संजय जैन, अजय जैन, कन्या मंडल, बगुमुंडा से तुलसीराम जैन, बॉबी जैन, सपना जैन, ज्ञानशाला, अभातेयुप प्रभारी गौतम जैन, घासीराम जैन, मास्टर रेहांश जैन, रितु जैन ने गीत के द्वारा सुमधुर प्रस्तुति दी।

ज्ञानशाला परिवार ने परिसंवाद प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन तेयुप पूर्व अध्यक्ष विकास जैन ने किया।

## भक्ति संध्या का आयोजन

**पर्वत पाटिया।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ के ११वें पट्टधर, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलं (भव्य भक्ति संध्या) का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। तेयुप भजन मंडली द्वारा विजय गीत गाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य गायक रितेश मालू, दिल्ली ने संघीय गीतों के माध्यम से समा बांधा। परिषद के गायक पारस गोलछा ने अपने गीतों से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

परिषद के भजन मंडली से प्रशांत मुणोत व विमल रांका ने अपनी प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में अभातेयुप से सीपीएस के सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, तेयुप परामर्शक अनिल चौधरी, सभाध्यक्ष कमल पुगलिया, मंत्री भगवती परमार, संगठन मंत्री प्रदीप गंग, तेयुप उपाध्यक्ष-प्रथम प्रदीप पुगलिया, उपाध्यक्ष-द्वितीय दिलीप चावत, सहमंत्री विनय जैन, तेयुप सदस्य, सभा सदस्य, महिला मंडल, किशोर मंडल एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

## आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस कार्यक्रम

**बैंगलुरु।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, बैंगलुरु व तेयुप, टी-दासरहल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४९वें दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत महाश्रमणोस्तु मंगलम् के रूप में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में प्रेरणा पाथेय का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। तेयुप, बैंगलुरु अध्यक्ष विनय बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप, टी-दासरहल्ली अध्यक्ष कुशल बाबेल ने बताया कि दोनों परिषद द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम् कार्यक्रम के अंतर्गत निबंध लेखन प्रतियोगिता, कविता लेखन प्रतियोगिता, प्रेरणा पाथेय एवं भव्य भक्ति संध्या का आयोजन किया गया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि ११ साल की उम्र में मोहन मुदित आचार्य महाश्रमण जी ने धर्मसंघ में एक कीर्तिमान स्थापित किया। छः भाइयों में आचार्यश्री उस समय मंत्री मुनि के सान्निध्य में प्रेरणा प्राप्त कर पूज्य गुरुदेव कालूगणी की माला फेरना शुरू किया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि समाज का शुभ भविष्य सर्वोत्र नेतृत्व पर निर्भर करता है। हम अति गौरवशाली हैं कि प्रारंभ से आज तक गौरवशाली आचार्यों का नेतृत्व मिलता रहा।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी, साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी व साध्वी चेलनाश्री जी द्वारा गीतिका की सुंदर प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन बैंगलुरु परिषद मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया। महासभा से प्रकाश लोढ़ा, अभातेयुप राष्ट्रीय नेत्रदान प्रभारी नवनीत मूथा, अभातेयुप क्षेत्रीय प्रभारी राकेश दक, अणुव्रत समिति मंत्री माणकचंद संचेती, अणुविभा संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोकरना ने अपनी भावनाएँ प्रेषित कीं। तेयुप उपाध्यक्ष भेरूलाल पोकरना, सहमंत्री विवेक मरोठी, रूपचंद देसरला की विशेष उपस्थिति रही। असम से पधारे महासभा के प्रतिनिधि नरेंद्र सेठिया का तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान किया गया। टी-दासरहल्ली परिषद सहमंत्री प्रवीण बोहरा ने सभी के प्रति आभार ज्ञापन किया।

## युवा दिवस का कार्यक्रम

**राजाजीनगर।**

अभातेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में अभातेयुप निर्देशित महाश्रमणोस्तु मंगलम् के रूप में मनाया गया।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र का उच्चारण किया गया। महाश्रमण अष्टकम से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि गुरु सृजनहार, चित्रकार, कुंभकार होते हैं, जो जीवन का सृजन करते हैं, रंग भरते हैं और कलश का आकार देते हैं। गुरुदृष्टि का प्रसाद वही व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जो श्रद्धावान और समर्पित होता है।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वैशाख १४ के दिन ४९ वर्ष पूर्व गृहस्थ जीवन से अभिनिष्क्रमण कर साधना का जीवन स्वीकार किया था। साध्वीश्री जी ने गुरुदेव के जीवन परिचय से सभी को अवगत करवाया। साध्वी अर्हम्प्रभाजी ने कविता के माध्यम से भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर राजाजीनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल पितलिया, महासभा के कर्नाटक राज्य प्रभारी कैलाश बोराणा, सभा पूर्व अध्यक्ष सुखलाल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्षा चेतना वेदमूथा, तेयुप अध्यक्ष मनोज मेहता एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री राजेश देरासरिया ने साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

## महानायक है - आचार्यश्री महाश्रमण

**पुणे।**

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्म दिवस, पट्टोत्सव, षष्टीपूर्ति व युगप्रधान अलंकरण समारोह का समायोजन पुणे क्षेत्र में साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में वर्धमान स्थानकवासी श्रीसंघ के स्थानक में मनाया गया।

इस अवसर पर तेममं की बहनों द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण द्वारा हुई। वर्धमान श्रीसंघ के अध्यक्ष शांतिलाल बोरा ने आचार्यश्री महाश्रमण जी को जैन धर्म के प्रभावक आचार्य बताते हुए सभी का स्वागत किया। साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि आज हम मानवता के महानायक का जन्म दिवस समारोह के रूप में मना रहे हैं। पदाभिषेक दिवस व युगप्रधान अलंकरण समारोह मना रहे हैं, यह तेरापंथ समाज का सौभाग्य है।

करुणा, श्रमशीलता और विनम्रता जैसे उदात्त गुणों के धारक हैं। आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व ने विश्वक्षितिज को मानव कल्याणकारी आलोक से आपूरित किया है। जिसके नेतृत्व में आत्मीय अनुशासन के आधार पर जन-जन के हृदय को बदला है। साध्वी ज्योतियशा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साध्वी सुरभिप्रभाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा कटारिया, सरला नाहटा, तेयुप की ओर से विनयश्यामसुखा, कन्या मंडल की ओर से दीपशिखा सेठिया, स्थानकवासी संघ के मंत्री आशीष बोहरा ने अपनी श्रद्धाभक्ति प्रस्तुत की।

आभार ज्ञापन वर्षा नाहटा ने किया। राकेश पारख ने श्रीसंघ के अध्यक्ष शांतिलाल बोहरा का सम्मान किया। कार्यक्रम की संयोजना में सुभाष भूतोड़िया का विशेष समावेश रहा।

## युवा दिवस पर कार्यक्रम

**गदग।**

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में धम्म जागरण संयुक्त रूप से गदग तेरापंथ भवन में रखा गया। तेरापंथ सभा, युवक परिषद, किशोर मंडल एवं महिला मंडल के सदस्यों ने श्रद्धापूर्वक गुरुभक्ति को धम्म जागरण के रूप में युवा दिवस को मनाया।

PDF Compressor Free Version



# साध्वीप्रमुखा मनोनयन के अवसर पर हृदयोद्गार

## गुरुदेव: शरणम्

● साध्वी मुक्तिश्री ●
● साध्वी कीर्तियशा ●

रचनाकार कब, कहाँ, कैसे नए इतिहास का सृजन कर दे कल्पनातीत है। आचार्य भिक्षु ने छोटे से गाँव बींठोड़ा में अपने समर्पित एवं आदर्श शिष्य को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। और प्रतीक रूप नई पछेवड़ी ओढ़ा दी। वर्तमान में युगप्रधान आचार्यप्रवर ने आज नया इतिहास रच दिया।

हमारा यह तेरापंथ धर्मसंघ हीरों की खान है। वर्तमान में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी उन हीरों के कुशल पारखी हैं।

आचार्यप्रवर ने अपनी पैनी-पारखी नजरों से मुख्य नियोजिकाजी जैसी हीरकणी को परखकर संपूर्ण तेरापंथ धर्मसंघ के सामने साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। आपने आचार्यप्रवर का इतने कम समय में विश्वास प्राप्त किया, यह मात्र आपका सौभाग्य ही नहीं अपितु पूरे साध्वी समाज के लिए गौरव का विषय है एवं हम सबके लिए प्रेरणा है।

आपने अपने आत्मोत्कर्ष के गुणों से गुरु-त्रयी का विश्वास पाया है, उस विश्वास को आप बहुगुणित कर संपूर्ण साध्वी (साधु) समाज का दिल जीत सके। यही नव-निर्वाचित साध्वी प्रमुखाश्री के प्रति मंगलकामना।

सृजनकार के नए सृजन का अभिनंदन,
बागमाली ने सरप्राइज के साथ किया है नया चयन।
साध्वीप्रमुखा का हर दिन हर पल बने सफल,
अमन चैन की करों दुआएँ, खिलता जाए संघ चमन।।

अंत में रचना के हर शब्द आप हैं, अर्थ आप हैं, भाव आप हैं,
प्रारंभ आप हैं, अंत आप हैं, सर्वत्र बस आप ही आप हैं।।

अंत में अंतः दिल से हार्दिक शुभकामना, मंगलकामनाएँ समर्पित।
आपश्री का स्वास्थ्य निरामय रहे। आपश्री की कुशल अनुशासना में संपूर्ण साध्वी समाज युगों-युगों गौरव वृद्धि करता रहे, इसी अंतर के पवित्र श्रद्धा भावों का गुलदस्ता।
नव-निर्वाचित साध्वीप्रमुखाजी के श्रीचरणों में अर्पित।
तुम जीओ हजारों साल, साल के दिन हो कई हजार।
दिवस का उत्तरार्ध पूर्वार्ध, अंतहीन पाएँ विस्तार।।
इन्हीं परम पवित्र भावना के साथ साध्वीप्रमुखाश्री का अभिनंदन-अभिनंदन-अभिनंदन।

-----------------------------

## हम आज बधाएँ

● साध्वी संयमलता ●

मंगलमय पावन पलों को आज बधाएँ—हम आज बधाएँ।
चयन नई साध्वीप्रमुखा का देख सभी हरसाएँ।
मनोनयन नव साध्वीप्रमुखा का देख सभी हरसाएँ।।

शासन माँ के महाप्रयाण से सूनी थी फुलवारी।
गुरुवर महाश्रमण ने फिर से हरी-भरी क्यारी।
नंदनवन सम भैक्षवगण पा अपना भाग्य सराएँ।।

विनयशील व्यवहार कुशल सहज समर्पित जीवन।
तप जप संयम अप्रमत्तता से सुरभित हर कण-कण।
अद्भुत श्री धी धृतिबल की हम बलि बलिहारी जाएँ।।

महर नजर गुरुत्रय की दृष्टि आराधन कर पाई।
श्रमनिष्ठा गुरुनिष्ठा से की शिखरों की चढ़ाई।
बढ़ो-चढ़ो शासनमाता ज्यों यही भावना भाएँ।।

चंदेरी की चाँदनी का चम-चम चमके भाल है।
पाकर नव साध्वीप्रमुखा धर्मसंघ खुशहाल है।
मोदी परिकर में खुशियों की उड़ रही हर्ष गुलाल है।
रहो निरामय कदम-कदम पर मंगलभाव सजाएँ।।

## वर्धापन

● शासनश्री साध्वी संघमित्रा ●

तुलसी शासन में ली दीक्षा,
महाप्रज्ञ का पाया साया।
महाश्रमण वर अनुशासन में,
नवम साध्वीप्रमुखा पद पाया।।

जन्म हुआ मोदी परिकर में,
'स्मितप्रज्ञा' समणी उपवन में।
'विश्रुत विभा' कोटि वर्धापन,
नवमी साध्वीप्रमुखा गण में।।

गुरु नजरों की दौलत पाई,
झेलो ढेरों ढेर बधाई।
'संघमित्रा' हर पल मंगल हो,
दीपित रहे संघ अरुणाई।।

महाप्रज्ञ की गहन नजर का पाया सिंचन,
महाश्रमण वर से जानी अनजानी विधियाँ।
जप, तप, ध्यान श्रुताराधन रत,
बाँटों गण में नूतन निधियाँ।।

-----------------------------

## अर्हम

● साध्वी उचितप्रभा ●

साध्वीप्रमुखा मन भाए, राग गौरव शिखर चढ़ाए।
शासन महिमा महकाए, स्वर्णिम इतिहास रचाए।
ये नंदन वन प्राणों से प्यारा है, जीवन का उजारा है।।

साध्वीप्रमुखाओं का गण में, रहा इतिवृत्त निराला है।
शतगुणित संघ सुषमा फैली, चिहुंदिशि में उजियाला है।
हम जय गणि के आभारी, दी प्रमुखा संघ को प्यारी।
जाए गण की बलिहारी, तेरापंथ गरिमा न्यारी।
ये नंदनवन प्राणों से प्यारा है—

चंदेरी की पुण्य धरा पर, मोदी कुल में जन्म लिया।
सहअस्तित्व सौहार्द समन्वय, आनंदित जीवन जीया।
अप्रमत्त जागरूक शैली, श्रद्धा निष्ठा अलबेली।
संघ निष्ठा अजब तुम्हारी, गुरु निष्ठा सदा निहारी।
ये नंदनवन प्राणों से प्यारा है—

तीन-तीन आचार्यों के दिल में, विश्वास जमाया है।
विनय समर्पण अनुशासन से, समता दीप जलाया है।
तप स्वाध्याय ध्यान क्षण-क्षण में, ऋजुता मृदुता कण-कण में।
वात्सल्य भरा जीवन में, उत्साह अनूठा तन में।
ये नंदनवन प्राणों से प्यारा है—

गुरु महाश्रमण महती अनुकंपा, संघ को नव उपहार दिया।
शासनमाता की सन्निधि में, उन्नति का आधार दिया।
हम अपना भाग्य सराएँ, ऐसे गुरु युग-युग पाएँ।
सौभाग्यलता लहराए, हम झुक-झुक शीष झुकाएँ।
ये नंदनवन प्राणों से प्यारा है—

लय : सूरज कब दूर गगन—

## अर्हम्

● शासनश्री साध्वी मंजुरेखा ●

खुशियाँ लेकर आई नूतन भोर है।
गुरुवर ने उपहार दिया हर मानव हर्ष विभोर है।।

सदाबहार मिला भैक्षव गण, तेजस्वी नेमानंदन।
साध्वीप्रमुखा मनोनयन, हम सविनय करते अभिवंदन।
हर्षित, पुलकित नाच रहे मन मोर।।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, करते हम सब अभिवंदन।
श्रमणी गण शृंगार बने, गरिमामय झेलो वर्धापन।
कीर्ति पताका फहराए, चिहुंओर है।।
महाश्रमण गुरुवर इंगित से, मिले आपका निर्देश।
विनय समर्पण सदा हमारा, धर्मसंघ यह नंदनवन।
गुरुवर करकमलों में जीवन डोर है।।

साध्वीप्रमुखाओं का गरिमामय इतिहास हमारा है।
शासनमाता ने हम सबमें फैलाया उजियारा है।
गण फुलवारी का सुरभित हर पौर है।।

लय : खड़ी नीम के नीचे—

### शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति

## करें हम श्रद्धा का उपहार

● साध्वी ऋजुप्रज्ञा ●

करें हम श्रद्धा का उपहार,
शासनमाता के चरणों में वंदन शत-शत बार।

कलकत्ता में जन्म लिया अरु बैद कुल उजियारा।
गुरु तुलसी के करकमलों से संयम पथ स्वीकारा।
विनय समर्पण बहती धारा, था ऊँचा आचार।।

गुरु निष्ठा, गण निष्ठा, श्रम निष्ठा लगती अलबेली।
मर्यादा अरु सेवा निष्ठा अद्भुत प्रवचन शैली।
क्षण-क्षण का उपयोग करके भरा ज्ञान भंडार।।

कार्यकुशलता और सुघड़ता थी तेरी अनुपम।
इंगियागार संपन्न बन निर्भार रहती हरदम।
देती चित्त समाधि सबको, भरे गहन संस्कार।।

समय-समय पर गुरुओं से संबोधन नूतन पाए।
असाधारण साध्वीप्रमुखा महाश्रमणी बन छाएँ।
संघ महानिदेशिका शासनमाता कहलाए।
अजब-गजब की बौद्धिक क्षमता महिमा अपरंपार।।

शासनमाता बड़भागी गुरुत्रय का आशीर्वर पाया।
उग्र विहारी गुरु महाश्रमण ने अंतिम साझ दिराया।
गुरुवर के श्रीचरणों में पहुँचे स्वर्ग मझार।।

लय : धर्म की लौ—

PDF Compressor Free Version



# तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

## वृद्धाश्रम में राशन सामग्री प्रदान

**राजराजेश्वरी नगर।**

तेयुप द्वारा आनंद सेवा साधना ट्रस्ट द्वारा संचालित वृद्धाश्रम में निवासित वृद्धजनों एवं उनकी देखरेख करने वालों के लिए राशन सामग्री प्रदान की। इस सेवा कार्य के प्रायोजक फूलदेवी, राकेश-प्रकाश बैद परिवार थे।

सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने जरूरत की सामग्री के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य दिनेश मरोठी, संगठन मंत्री राकेश दुगड़, सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी, सहप्रभारी सुपार्श्व पटावरी, कार्यसमिति सदस्य पीयूष बैद, सौरभ चोरड़िया का सहयोग रहा। सेवा कार्य प्रभारी दीपक गोठी ने आभार ज्ञापन किया।

## अस्थि जोड़ चेकअप का आयोजन

**रायपुर।**

तेयुप द्वारा संचालित अभातेयुप का महनीय उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर द्वारा अस्थि जोड़ चेकअप परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविख्यात अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ० धीरज मरोठी जैन की टीम डॉ० सिद्धार्थ कुमार परामर्श हेतु उपस्थित हुए।

इस कैंप का लाभ १२ लाभार्थियों ने उठाते हुए एटीडीसी की अन्य सेवाओं का भी लाभ लेने के साथ ही परामर्श कैंप की सराहना की। परामर्श कैंप में एटीडीसी में कार्यरत टेक्नीशियन सुषमा सहा का सहयोग प्राप्त हुआ। परामर्शक शिविर में तेयुप, रायपुर उपाध्यक्ष सुमित जैन व मंत्री गौरव दुगड़ की सक्रिय उपस्थिति रही।

## रक्तदान शिविर का आयोजन

**हिंदमोटर।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, हिंदमोटर एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने भद्रकाली प्रगति संघ हिंदमोटर के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन शिवतल्ला लेन में किया। इस शिविर में कुल ५८ पंजीकरण हुए और कुल ४६ यूनिट रक्त संग्रह किया गया।

परिषद सभी रक्तदाताओं का, अपनी युवा शक्ति का, प्रबुद्ध विचारकों एवं आमंत्रित सदस्यों लक्ष्मीपत सुराणा, मोहनलाल चोरड़िया, भंवरलाल बैद, राजेश सुराणा, रवि बैद, दिनेश दफ्तरी, महेंद्र दुगड़ एवं दीपक बांठिया का जिनकी उपस्थिति में कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया सभी का आभार ज्ञापित करती है।

कार्यक्रम का संचालन थानमल लूणकरण मालू ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक विवेक सेठिया, ऋषभ गुजराणी तथा अध्यक्ष विकास भटेरा, मंत्री मंडल सदस्य विकरांत दुधेड़िया आदि सदस्यों ने सहयोग दिया। मंत्री पंकज बैद ने कार्यक्रम को सफल आयोजन हेतु भद्रकाली प्रगति संघ हिंदमोटर एवं सभी रक्तदाताओं के जज्बे को नमन करते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

## युवा जागृति कार्यक्रम का आयोजन

**रायपुर।**

अभातेयुप निर्देशित युवा जागृति कार्यक्रम 'जागो युवा जागो' Youth Awakening संवाद अन्य सेवाभावी राष्ट्रहित में समानांतर कार्यरत संस्थाओं से संवाद/विचार-मंथन का आयोजन तेयुप, रायपुर द्वारा किया गया। जिसमें ७ अन्य संस्थाओं के साथ ही २ संघीय संस्थाओं के लगभग २१ सदस्यों की उपस्थिति प्राप्त हुई। कार्यक्रम में उपस्थित संस्थाओं के अध्यक्षों द्वारा संस्था द्वारा सेवा के क्षेत्र की जानकारी दी गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के पश्चात विजय गीत के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप निर्देशित तेयुप, रायपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम की उपस्थिति सभी संस्थाओं ने प्रशंसा करते हुए इस प्रकार के प्रयास आपसी सामंजस्य हेतु निरंतर करने हेतु निवेदन किया।

कार्यक्रम में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति, चैम्बर ऑफ कॉमर्स, वर्धमान मित्र मंडल, बढ़ते कदम, जैन प्रयास ग्रुप, महावीर युवा मंच, विनय मित्र मंडल के साथ ही तेरापंथी सभा, टीपीएफ की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही।

## भिक्षु भक्ति कार्यक्रम

**उधना।**

आचार्य भिक्षु की सुदी तेरस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया। मुख्य रूप से तेयुप भजन मंडली ने नवकार महामंत्र, प्रभु पार्श्व स्तुति, भिक्षु नाम बड़ा चमत्कारी, मनुष्य जन्म अनमोल आदि अनेकों अनेक स्वरों से आनंदित किया।

भजन मंडली से संजय बोथरा, नेमीचंद कावड़िया, मानव दुगड़, कपिल कावड़िया, आकाश डांगी सभी ने अच्छी प्रस्तुति देते हुए गीत का संगान किया।

तेयुप, उधना से अध्यक्ष मनीष दक, मंत्री गौतम आंचलिया, संगठन मंत्री महेंद्र रांका, हर्ष कोठारी, वरुण बोथरा आदि अनेक सदस्यगण एवं श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। भजन मंडली प्रभारी कपिल कावड़िया ने आभार ज्ञापित किया।

## एमबीडीडी के तहत ११५ यूनिट रक्त एकत्रित

**उधना।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, उधना द्वारा ५ जगह रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय सह-संयोजक सौरव पटावरी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर मार्गदर्शन प्रदान कराया। ब्लड डोनेशन कैंप में यूथ फॉर गुजरात के अध्यक्ष जिग्नेश भाई पाटिल, कॉर्पोरेटर विनोद भाई पाटिल व नरपत सिंह ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

अध्यक्ष मनीष दक ने सभी रक्तदाताओं एवं सूरत रक्तदान ब्लड बैंक शिविर, रक्तदान ब्लड बैंक, सरदार वल्लभभाई ब्लड बैंक एवं सभी युवाशक्ति का आयोजन को सफल बनाने में योगदान प्रदान करने के लिए आभार प्रकट किया।

## रक्तदान शिविर का आयोजन

**राजाराजेश्वरी नगर।**

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा मार्स क्लासिक अपार्टमेंट में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में शिविर का आयोजन संकल्प इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से किया गया। सामुहिक नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली ने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। प्रत्येक रक्तदाताओं से व्यक्तिशः रक्तदान करवाया गया। जिसके अंतर्गत ४१ यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। शिविर में रक्तदान करने वाले सभी रक्तदाताओं को सम्मानित किया गया।

शिविर में तेरापंथ सभा अध्यक्ष मनोज डागा, अभातेयुप सदस्य इंद्र छाजेड़, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, उपाध्यक्ष अमित नौलखा, धर्मेश नाहर, सहमंत्री सरल पटावरी, कोषाध्यक्ष देवेंद्र नाहटा, परिषद के परामर्शक विकास दुगड़, पूर्व अध्यक्ष गुलाब बांठिया, एमबीडीडी के स्थानीय संयोजक विकास छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही। शिविर की सफल आयोजना में पूरी टीम के साथ मार्स क्लासिक अपार्टमेंट के सदस्यों ने सहयोग कर कार्यक्रम को सफल बनाया। संयोजन विकास छाजेड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

# फिट युवा हिट युवा

**विवेक विहार, दिल्ली।**

तेयुप द्वारा फिट युवा हिट युवा कार्यक्रम का आयोजन आचार्य महाप्रज्ञ पार्क, विवेक विहार, दिल्ली में रखा गया, जिसमें विवेक विहार, सूर्यनगर, शाहदरा, गांधीनगर एवं दिल्ली के सभी क्षेत्रों से युवकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

उपासक, प्रेक्षाध्यापक एवं संस्कारक विमल गुनेचा ने सभी युवा साथियों को प्रेक्षाध्यान एवं योगासन के प्रयोग करवाए और सभी को योग प्राणायाम का महत्त्व बताते हुए उन्हें प्रेरणा भी दी। कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप देने में शाहदरा क्षेत्र के संयोजक पवन पारख एवं सभी युवा साथियों का अथक श्रम रहा। कार्यक्रम में टीपीएफ, दिल्ली के साथियों की भी उपस्थिति रही।

# सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला

**राजाजीनगर।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग की सप्त दिवसीय कार्यशाला का तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में सामुहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से आगाह हुआ। तेयुप अध्यक्ष मनोज मेहता ने सभी ३३ प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए शुभकामनाएँ संप्रेषित की। अभातेयुप राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत ने अपने वक्तव्य में प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए परिषद परिवार के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

जोनल प्रशिक्षक भव्य बोथरा ने कार्यशाला के प्रथम दिन सभी प्रतिभागियों का एक-दूसरे का परिचय सत्र के माध्यम से कार्यशाला प्रारंभ की। वक्तृत्व कला की आवश्यकता बताते हुए, एक अच्छे वक्ता के लिए उसके परिधान का महत्त्व, खड़े रहने का तरीका, बात करने की कला, कैसे अभिवादन करें और लोगों को अपने वक्तव्य के प्रति आकर्षित करने के बारे में विस्तृत रूप से प्रशिक्षित किया।

इस अवसर पर सीपीएस के राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, राष्ट्रीय सीपीएस प्रभारी सतीश पोरवाड़, राष्ट्रीय प्रशिक्षक बबीता रायसोनी, जोनल प्रशिक्षक संगीता गन्ना, खुशी चावत एवं परिषद परिवार से कार्यशाला प्रभारी कमलेश चोरड़िया, संयोजक सचिन हिंगड़, सह-संयोजक मिनल गांधी, कमलेश गन्ना, ललित मुणोत की उपस्थिति रही। संचालन तेयुप मंत्री राजेश देरासरिया ने किया।

# भिक्षु धम्म जागरण

**पश्चिम विहार, दिल्ली।**

वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को महामना आचार्यश्री भिक्षु को वंदन करते हुए तेरस के अवसर पर तेयुप द्वारा भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। तेयुप, दिल्ली के युवकों ने सुमधुर स्वर में विजय गीत का संगान किया। तेयुप, दिल्ली के मंत्री सौरभ आंचलिया ने कार्यक्रम में सहभागी सभी श्रावक समाज एवं पदाधिकारियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में गायक के रूप में ललित श्यामसुखा, श्रेणिक जैन, मोनिका जैन, इशिका जैन, विजय जैन, राहुल बोथरा, मनीष बरमेचा, निर्मला बैद, संजय चोरड़िया, श्रेया चोरड़िया, चैतन्य चोरड़िया, प्रवीण बैद आदि थे।

कार्यक्रम में चोरड़िया परिवार के द्वारा सामुहिक गीतिका ने वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। तेरापंथी सभा, पश्चिम विहार के अध्यक्ष श्यामलाल जैन ने तेयुप, दिल्ली द्वारा आयोजित धम्म जागरण की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप, दिल्ली के सांस्कृतिक सहप्रभारी प्रवीण बैद ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप, दिल्ली के कार्यकर्ता एवं सभा के मंत्री मनीष बरमेचा द्वारा किया गया।

## जब तक शरीर समर्थ हो करते...

(पृष्ठ १६ का शेष)

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में तेरापंथ युवक परिषद, किशोर मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, सभाध्यक्ष निर्मल भूरा, अणुव्रत समिति, नोखा नगरपालिका अध्यक्ष नारायण झंवर, नोखा विधायक बिहारीलाल बिश्नोई, कन्हैयालाल झंवर, पूर्व मंत्री रामेश्वर डुडी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्यप्रवर ने पलक सेठिया को ६ की तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई। आचार्यप्रवर ने १२ जोड़ों को आजीवन शीलव्रत एवं १० जोड़ों ने एक साल के लिए शीलव्रत के प्रत्याख्यान करवाए। नोखा में पाँच श्रावकों ने आचार्यप्रवर से सुमंगल साधना के संकल्प लिए। इसके अतिरिक्त १३ व्यक्तियों ने ग्यारह सूत्र पढ़ने का संकल्प, ६७ भाई-बहनों ने ११०० पृष्ठ स्वाध्याय का संकल्प, ६१ लोगों ने ६१ तपस्या को थोकड़े करने का संकल्प लिया। युवक परिषद एवं किशोर मंडल द्वारा त्याग तरणी मोक्ष निसरणी, कन्या मंडल द्वारा त्यागों का गुलदस्ता, ११ व्यक्तियों द्वारा ग्यारह तत्त्वज्ञान के थोकड़े सीखने के संकल्प श्रीचरणों में समर्पित किए। नगरपालिकाध्यक्ष नारायण झंवर एवं अन्य पार्षदों ने पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र अर्पित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

PDF Compressor Free Version



✦ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

—आचार्यश्री महाश्रमण

## संतों की वाणी को करें आत्मसात : आचार्यश्री महाश्रमण

**उदासर, ३० मई, २०२२**

सोमवती अमावस्या, अध्यात्म के शिखर पुरुष, तीर्थंकर के प्रतिनिधि धवल सेना के साथ आज १४ किलोमीटर का विहार कर उदासर पधारे। उदासर में मानो दीपावली जैसा माहौल बन गया। आसपास के कई क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाएँ पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पधारे हैं।

विशाल जनमेदिनी को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि हमारे जीवन में पाँच इंद्रियाँ हैं, जो इस शरीर से जुड़ी हुई हैं। श्रोतेन्द्रिय है, वह प्राणी पंचेन्द्रिय ही है। श्रोतेन्द्रियाँ और चक्षुरिन्द्रिय ज्ञान का सशक्त माध्यम है।

आदमी सुनकर पाप को भी जान लेता है और कल्याण को भी जान लेता है। जान लेने के बाद जो श्रेयस्कर है, छेक है, हितकर है, उसका आचरण करना चाहिए। जो गलत, अहितकर है, उससे दूर रहना चाहिए। जैसे झूठ बोलना पाप है, उससे बचना चाहिए। जो निरवद्य सत्य है, उसका आचरण करना चाहिए। हेय को छोड़ देना चाहिए। उपादेय को ग्रहण कर लेना चाहिए।

साधु उपदेश देते हैं तो कितनी बातें सुनने से ज्ञात हो जाती हैं। संत पर-उपकार करने वाले होते हैं। जैसे वृक्ष तीव्र ताप को सहन करता है, पर उसकी छाया में जो बैठे हैं, उनको शीतलता या ठंडक प्रदान कर देता है।

संत जहाँ भी आएँ, उस गाँव के लिए भी अच्छी बात है। भारत में अनेक धर्म और जातियाँ हैं। भाषाएँ भी अनेक हैं। भारत में विभिन्नता है। इस अनेकता में भी अहिंसा की चेतना रहे। सब में मैत्री भाव रहे। जाति भेद आदि वैमनस्य के कारण न बने।

संतों से ज्ञान मिलता रहे। संत जो त्यागी, श्रद्धेय है, लोग उनकी बात मानते हैं। संतों से ज्ञान की बात सुनकर आत्मसात हो जाए तो अच्छी बात हो सकती है। सुनना भी अपने आपमें अच्छी बात है। संत त्याग की, संयम की व आगे की प्रेरणा दे सकते हैं। धन की तरफ कम ध्यान देकर, धर्म पर ध्यान दें, उसका फल आगे जा सकता है। हम अच्छी बातें कानों से सुनने का प्रयास करें।

आज उदासर आना हुआ है। कई साध्वियों-समणियों से मिलना हो गया है। नए साध्वीप्रमुखाश्री पधारे हैं। उदासर की जनता में खूब धार्मिक चेतना वाली रहे।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कहा कि परमपूज्य बीकानेर संभाग की यात्रा करते हुए आज उदासर पधारे हैं। यहाँ के लोगों में प्रफुल्लता है, आह्लादित और आनंदित है। पूज्यप्रवर की प्रलंब यात्रा तेरापंथ की प्रभावना में सहायक बन रही है। पूज्यप्रवर लोगों के परिताप का हरण कर रहे हैं। जो व्यक्ति महापुरुषों की सन्निधि में पहुँच जाता है, उनके सारे संताप दूर हो जाते हैं। जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को आध्यात्मिक बना लेता है, उसकी वर्धापना होती है। आचार्यप्रवर साधना संपन्न है, इस कारण वे लोगों को आकर्षित कर रहे हैं।

साध्वी कांतप्रभाजी, साध्वी गुणरेखाजी ने आचार्यप्रवर का अपनी जन्मभूमि में पधारने पर स्वागत के स्वरों में उदासर के इतिहास की जानकारी दी। बीकानेर संभाग में चतुर्मास करने वाली साध्वियों ने समुहगीत की प्रस्तुति दी।

उदासर की मुमुक्षु रश्मि, तेरापंथ सभाध्यक्ष हड़मानमल महनोत, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला, जितेंद्र, उदयचंद चौपड़ा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

उदासर के सुश्रावक हनुमानमल दुगड़ की जीवनी तुलसी के हनुमान पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में उनके परिवार वालों ने लोकार्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कर्मवाद पर विवेचन करते हुए समझाया कि पाप कर्म से बचने वाला अध्यात्म के शिखर पर चढ़ सकता है। मुनिश्री ने उपासक श्रेणी की महत्ता एवं नए उपासक बनने की प्रेरणा दी।

### युगप्रधान अलंकरण के अवसर पर

#### अर्हम्

● समणी मृदुप्रज्ञा ●

हे पथदर्शक शासन शेखर
नैयाखेवनहार
माँ नेमासुत वंदन बारंबार
झूमर सुत वंदन बारंबार।।

मातृभूमि सरदारशहर में
उत्सव मंगल है घर-घर में
युगप्रधान भैक्षवशासन में
पुण्य पुंज अवतार।।

विश्व मैत्री और सत्य पुजारी
श्रम-शम-उपशम निर्मलधारी
पट्टोत्सव की शुभ-बेला में
शक्ति का संचार।।

गुरु उपासना है सुखदायी
प्रेरक उद्बोधन वरदायी
महातपस्वी महाश्रमण की
शरण सदा सुखकार।।

## वाणी तय करती है संबंधों की दिशा : आचार्यश्री महाश्रमण

**गाढ़वाला, ३१ मई, २०२२**

भीषण गर्मी में समता की साक्षात् प्रतिमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी १३ किलोमीटर का विहार कर गाढ़वाला के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में महायायावर, शांत सौम्यमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन व्यवहार में भाषा का बहुत उपयोग होता है। २४ घंटों में कितनी बार हम वाणी का प्रयोग करते हैं। वाणी एक ऐसा तत्त्व है, जो संबंधों को बिगाड़ने वाली बन सकती है, तो बिगड़े हुए संबंधों को सुधारने वाली भी बन सकती है।

शास्त्रकार ने वाणी के संदर्भों में दो चरणों में तीन बातें खास बताई हैं। वाणी मित होनी चाहिए। आदमी को परिमितभाषी होना चाहिए। कितने लोग मौन की साधना भी करते हैं। आदमी वाणी का संयम रखें।

दूसरी बात बताई है—भाषा दोष रहित होनी चाहिए। झूठ बोलना व कटु बोलना भी वाणी का दोष है। कहा गया है—सत्य बोलो, प्रिय बोलो। अप्रिय सत्य भी मत बोलो और प्रिय झूठ भी मत बोलो, यह शाश्वत धर्म है।

तीसरी बात बताई है—भाषा विचारपूर्वक बोलनी चाहिए। पहले बुद्धि से सोचो, समझो बाद में वाणी को बाहर निकालो। पहले तोलो फिर बोलो। चिंतनपूर्वक हमारा बोलने का अभ्यास होना चाहिए। गुस्से से भी भाषा सदोष हो सकती है। गुस्से को नियंत्रण में रखो, गुस्से को पी जाओ यह एक प्रसंग से समझाया कि हमारी वाणी में गुस्सा या गालियाँ ना आ जाएँ।

बिना समझे वाणी से झूठा आरोप लगा देना अभ्याख्यान पाप है। सत्य बोलना उचित नहीं तो मौन रह जाएँ। गृहस्थ भी झूठ बोलने से बचने का प्रयास करें।

यह एक प्रसंग से समझाया कि वाणी से पता चल जाता है कि सामने वाला व्यक्ति कैसा है। आवाज सुनकर आदमी पहचान कर सकता है। जबान पर लगाम भी रहनी चाहिए। मधुरता और सच्चाई भाषा का आभूषण है। हमें भाषा में इसलिए संयम रखना चाहिए कि पाप कर्म का बंध न हो।

मौन का अभ्यास भी अच्छा है। शास्त्रकार ने कहा है कि मित् दोष रहित और हितार्थ पूर्ण भाषा बोलने वाला व्यक्ति सज्जनों में प्रशंसा को प्राप्त करता है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्कूल में प्रिंसिपल श्रावक गोदाला, नोखा से महिला मंडल, मरोठी परिवार की बहनें, अवधि, मनीष, तन्वी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### युगप्रधान अलंकरण के अवसर पर

#### है दुनिया को नाज

● शासनश्री साध्वी कुंथुश्री ●

भाग्य सराहें, गौरव गाएँ, युगप्रधान गुरुराज।
अभिनंदन नेमा नंदन, अर्पित श्रद्धा चंदन।।

वर्धापन की मंगल बेला संघ खुशहाल है,
अनुत्तर संयम समता तेजस्वी भाल है,
दसों दिशाएँ, तुम्हें बधाएँ, खुशियाँ बे-अंदाज।।

जीवन निर्माता प्रभुवर बोधि प्रदाता,
धन्य बन जाता जो भी चरणों में आता,
वर्षों की जागी पुण्याई, पुलकित सकल समाज।।

युगपुरुष बहाई जग में, करुणा की धारा,
भटके मनुज को मिला सिंधु किनारा,
मानवता के महामसीहा, है दुनिया को नाज।।

युगद्रष्टा युगसृष्टा युग अवतारी,
श्रुतधर शक्तिधर शांतिधर—धारी,
युग-युग जीओ करो शासना, शासन के सरताज।।

लय : स्वर्ग से सुंदर---

PDF Compressor Free Version



रक्तदान का विश्व कीर्तिमान रचने वाली विश्व की सबसे बड़ी रक्तदाता संस्था
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने आगाज किया रक्तदान के महाअभियान का

# पवन वेग से फैली पूरे देश में एक खबर

**लेह लद्दाख, कच्छ–रण, कन्याकुमारी, अरुणाचल प्रदेश, नागपुर 'जीरो' पॉइन्ट में गूंजी MBDD की गूंज**

५ जून २०२२! अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा के नेतृत्व में दिनांक ५ को देश के ५ चिन्हित स्थानों पर रक्तदान शिविर लगाकर आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में आगामी १७ सितंबर २०२२ (अभातेयुप स्थापना दिवस) को होने वाले मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आगाज़ किया गया। इस अवसर पर जारी शुभकामना संदेश में राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने मानव सेवा के इस महाअभियान में सभी को जुड़ने एवं अपना हर संभव सहयोग व समर्थन देने की अपील की तथा आयोजन के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त की।

समुद्र तल से १८००० फीट की ऊंचाई वाली भारत की सबसे ऊंची लेह लद्दाख की पर्वतीय खर डुंगला चोटी पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। लेह लद्दाख की बर्फीली चोटियों पर जहां ऑक्सीजन की इतनी कमी होती है, वहां एक विकलांग व्यक्ति द्वारा अपने जीवन का १२१वां रक्तदान कर अनूठी मिसाल पेश की। 'जय जय ज्योतिचरण : जय जय महाश्रमण' के उद्घोष से गूंज उठी लेह की बर्फीली चोटियां। इस अवसर पर लद्दाख के सांसद, कलेक्टर, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और महिला आयोग के अध्यक्ष के साथ अन्य कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। MBDD के राष्ट्रीय प्रभारी हितेश भंडिया ने संपूर्ण जानकारी देते हुए बताया कि जब इतनी ऊंचाई पर रक्तदान हो सकता है तो देश का कोई भी भाग कैसे इस महाभियान से अछूता रह सकता है। उन्होंने सभी को १७ सितम्बर २०२२ को रक्तदान करने की अपील की।

वहीं भारत के अंतिम छोर एवं तीन महासागरों के संगम स्थल कन्याकुमारी में तमिलनाडु सरकार की विशेष अनुमति से विवेकानंद केंद्र में तेयुप चेन्नई एवं लायंस क्लब की संयुक्त आयोजना में अभातेयुप साथी एवं तेयुप चेन्नई अध्यक्ष मुकेश नवलखा, मंत्री संतोष सेठिया, सोनू डागा, कोमल डागा एवं निलेश मरलेचा की उपस्थिति में महाभियान का कमल खिला।

वहीं कच्छ के रण, गर्वी गुजरात के रेगिस्तान में व्हाइट रन रिजोर्ट में भुज तेयुप द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में MBDD राष्ट्रीय सह प्रभारी सौरभ पटावरी की उपस्थिति में लोगों ने रक्तदान किया। तेयुप भुज के अध्यक्ष आशीष बाबरिया, उपाध्यक्ष जिग्नेश डोशी, मंत्री महेश गाँधी, सह मंत्री भाविक मेहता, संगठन मंत्री आदर्श संघवी, भुज सभा के सहमंत्री सुरेंद्र गांधी मेहता सहित तेयुप के कई साथीगण ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

मध्य भारत स्थित नागपुर (भारत का जीरो माइल्स सेंटर) में डॉक्टर हेडगेवार ब्लड बैंक के सहयोग से तेयुप नागपुर ने अभातेयुप सदस्य महेंद्र आंचलिया, परामर्शक प्रमोद गादिया, तेयुप नितिन नखत, मंत्री मोहित बोथरा, उपाध्यक्ष गौतम जोगड़, तरुण सेठिया, कोषाध्यक्ष सौरभ दफ्तरी, विनय आंचलिया, अरिहंत पटावरी, महावीर बोथरा, अजीत नाहटा, राहुल कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष सुषमा डागा, सहमंत्री मनीषा नखत की उपस्थिति में रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

अरूणाचल प्रदेश के जंगलों में ब्लड सेंटर ज्त्म्ब्डे द्वारा अरुणाचल के नाहरलगुन में तेयुप गुवाहाटी और केयर क्लब संयुक्त रूप से रक्तदान शिविर का आयोजन कर इस स्वर्णिम इतिहास के गवाह बने। अभातेयुप साथी आशीष कोचर, सहमंत्री संदीप बैद, तेयुप सदस्य कमलेश रांका, नवीन मालू ने श्रम नियोजित किया।

इस अवसर पर जारी अपने संदेश में अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने बताया कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा १७ सितंबर को रक्तदान का महाभियान होने जा रहा है, जिसमे देश के विभिन्न राज्यों में १००० से ज्यादा कैंप लगेंगे। उन्होंने इस अभियान से जुड़े हजारों हजार कार्यकर्ताओं के श्रम नियोजन हेतु साधुवाद ज्ञापित किया।

भारत सरकार, राज्य सरकारों एवं स्थानीय प्रशासन से भी हमें अभूतपूर्व सहयोग मिल रहा है। भारत के महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोबिंद , माननीय प्रधानमंत्री  नरेन्द्र मोदी, लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला ,रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडवीया, कृषि मंत्री नरेंद्र तोमर ने भरपूर सहयोग का भरोसा जताया है। पूरे देश में संचालित तेयुप की ३५० से अधिक शाखा परिषदों के पदाधिकारिगण राज्य सरकारों, राजनेताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, अभिनेताओं, उधोगपतियों, विशिष्ट महानुभावों से मिलकर इस महाभियान में सहयोग और समर्थन का निवेदन कर रहे हैं। विभिन्न समाजसेवी संस्थाएं भी युथ अवेकनिंग कार्यशालाओं (मुख्य संयोजक अमित सेठिया) में उपस्थिति दर्ज करवा कर सहयोग का हाथ बढ़ा रही है।

अभातेयुप के इस समाचार को देश के विभिन्न राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल, गुजरात, असम, अरुणाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू कश्मीर, लेह लद्दाख, तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश के प्रमुख समाचार पत्रों एवं न्यूज चैनल्स ने प्रमुखता से प्रकाशित/प्रसारित किया।

अभातेयुप MBDD मीडिया टीम संयोजक सूर्यप्रकाश डागा, सह संयोजक अमित गन्ना, स्टार प्रचारक संजय भंडारी एवं रूपम पटवा ने जागरूकता का परिचय देते हुए इस महाभियान का देशव्यापी प्रचार प्रसार का बीड़ा उठाया। मीडिया प्रभार के साथी चमन श्रीमाल, कैलाश, संतोष सेठिया, नवीन, विकेश दक सहित कई परिषदों के मीडिया प्रभारियों द्वारा शानदार श्रम का नियोजन किया गया।

दक्षिण भारत, कन्या कुमारी

मध्य भारत, नागपुर

पश्चिम भारत
कच्छ का रण

पूर्वी भारत,
नाहर लगुन

Lalwani Ferro Alloys Ltd
कमल किशोर संदीप कुमार ललवानी
नोखा - कोलकाता

शुभकामनाओं सहित
Jaishree Cotton Mills
जयश्री JAISHREE
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

PDF Compressor Free Version



✦ धर्म का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है सच्चाई। नैतिकता सच्चाई से जुड़ा हुआ तत्त्व है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

## आचार्य महाश्रमण ने मुख्यमुनि महावीर को अपनी माला पहनाकर दिए भावी शुभ संकेत

# जब तक शरीर समर्थ हो करते रहें धर्माराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मनगरी नोखा में दिखा अनोखा नजारा–धर्मसंघ में पहली बार

**नोखा, ४ जून, २०२२**

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज नवमनोनीत साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी एवं संपूर्ण धवल सेना के साथ ६ किलोमीटर विहार कर धर्मनगरी नोखा के तेरापंथ भवन में पधारे। नोखा तेरापंथ धर्मसंघ की श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। अनेक साधु-साध्वियाँ एवं समणियाँ नोखा से संबंधित हैं। नोखा से संबंधित मुनि नयकुमारजी जो 'तेरापंथ टाइम्स' का प्रकाशन संबंधी कार्य संभाल रहे हैं।

महामनीषी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्त्व हैं–एक है शरीर और दूसरा है आत्मा। इन दो तत्त्वों के मिलने से ये जीव निर्मित हुआ है। सिद्ध भगवान मोक्ष में है, वहाँ आत्मा तो है, पर शरीर नहीं है। वहाँ जीवों का जीवन काल नहीं है।

शास्त्रकार ने कहा है कि यह हमारा शरीर एक नौका है। हमारी आत्मा नाविक है। ये संसार जन्म-मरण का अथाह सागर है। इस सागर को शरीर रूपी नौका द्वारा ये जीव जब महर्षि-साधक बन जाता है, तो तर जाता है।

हमारे जीवन में शरीर का अपना महत्त्व है, आत्मा का अपना महत्त्व है। शरीर की सक्षमता में तीन बाधाएँ हैं–बुढ़ापा, व्याधि और इंद्रिय शक्ति की हीनता।

गुरुदेव तुलसी ने दीर्घ यात्राएँ की थीं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कितना वैदुष्य अर्जित किया, साहित्य सृजन किया, आगम संपादन का कार्य किया। उनमें कितना सामर्थ्य रहा होगा। शरीर जब तक समर्थ है, तब तक धार्मिक साधना जितनी हो सके कर लें। साधु-साध्वियाँ सेवा कर लें। गृहस्थ भी जब तक शरीर सक्षम है, धार्मिक साधना-आराधना कर लें। जीवन के अंतिम समय में पछतावा न करना पड़े कि मैंने धर्म की साधना कोई विशेष की ही नहीं।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आज संसार में विद्यमान नहीं हैं, पर वह भी कितनी बार नोखा पधारी होंगी। नई साध्वीप्रमुखाजी पधारी हैं। शासन गौरव बहुश्रुत परिषद की सदस्या साध्वी राजीमतीजी से मिलना हो गया है। राजीमती जी हमारे धर्मसंघ की ख्यातनाम साध्वी हैं। साधना में भी प्रतिष्ठित हैं। स्वास्थ्य अनुकूल रहे।

नोखा मंडी में चाहे राजनीति के लोग हो या समाजनीति के लोग जैन-अजैन सभी में नैतिक मूल्यों के प्रति भावना रहे। जीवन में सद्‌भावना, नशामुक्ति रहे। धर्म-अध्यात्म जीवन में रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि गुरुदेव ने तेरापंथ के सेवाकेंद्रों रूपी तीर्थों की २०१० में यात्रा की थी। वर्तमान में भी थली-हरियाणा के क्षेत्रों में आचार्यप्रवर पधारे हैं। वृद्ध साधु-साध्वियों से आज भी मिलने-दर्शन देने के भाव रहते हैं। जिस संघ में ऐसे गुरु होते हैं, वह संघ हमेशा प्रवर्धमानता की ओर अग्रसर रहता है।

### आचार्यप्रवर महापुण्यवान हैं

शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि व्यक्ति को भगवान, गुरु और आत्मा की शरण में रहना चाहिए। गुरु की शरण में रहने से साधना का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। हर व्यक्ति पुण्यवान होता है, परंतु पुण्यवानी की रक्षा करना हर कोई नहीं जानता है। आचार्यप्रवर महापुण्यवान हैं और वाणी के अनुत्तर संयम, सदैव प्रसन्नचित्त, प्रशांत रहकर पुण्यवता की सुरक्षा ही नहीं उसमें अभिवृद्धि कर रहे हैं। नोखा मंडी में उत्साह, उदारता, उपयोग की भावना गुरुदेव के चातुर्मास के लायक है।

सहवर्ती साध्वियों ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना रखी। साध्वी राजीमती जी ने पूज्यप्रवर को हस्तनिर्मित माला भेंट की। पूज्यप्रवर ने ध्यान से उसका अवलोकन करते हुए उसे धारण किया। मुख्य मुनिप्रवर ने पूज्यप्रवर को वह माला धारण करवाई।

साध्वी राजीमती जी द्वारा अर्पित माला के बारे में आचार्यश्री ने फरमाया कि यह एक रक्षा कवच रूप है। देव, गुरु, धर्म और परम प्रभु हमारी आत्मा व शरीर की रक्षा करते रहें। हमने इसे ग्रहण कर लिया है। हमारे पूरे धर्मसंघ की रक्षा हो अब संघ के प्रतीक के रूप में मैं इसे मुख्य मुनि को पहना रहा हूँ। आज इनका जन्म दिवस भी है। उपस्थित श्रावक-श्राविकाएँ गुरु-शिष्य के इस आत्मीय दृश्य को देखकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। नोखा में इस अनूठे दृश्य के साथ एक नया इतिहास सृजित हो गया कि किसी आचार्य ने एक मुनि को अपनी माला पहनाई हो।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

## यादें... शासनमाता की – (१०)

**● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●**

१६ मार्च, २०२२, प्रातः लगभग ७ बजे

**आचार्यप्रवर :** कैसे हैं?

**साध्वीप्रमुखाश्री :** ठीक ही हैं। (इशारे से)

**आचार्यप्रवर :** अभी भी श्वास पर थोड़ा असर है।

**साध्वी कल्पलता :** पहले थोड़ा जोर से आ रहा था।

**आचार्यप्रवर :** अच्छा, और जोर से आ रहा था।

फिर आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाश्री को कुछ समय के लिए मौन उपासना करवाई।

**सायंकाल**

**आचार्यप्रवर :** (मुनि दिनेश कुमार जी से) दसवीं ढाल।

रात की आलोयणा करवा दें। दो घंटा जाप-स्वाध्याय। कान नहीं पड़े तो निर्जरा पेटे मान लें।

**साध्वी कल्पलता :** रोज की आलोयणा तो अपने आप ही ले लेते हैं। श्वासोच्छ्‌वास हो या नहीं, स्वाध्याय से उतार लेते हैं।

**साध्वी सुमतिप्रभा :** ध्यान भी बहुत जागरूकता से करवाते हैं।

**आचार्यप्रवर :** १०वीं ढाल में बताया है कि नवकार में सब शुद्ध आत्मा है। अर्हत् है तो वीतराग है, आचार्य है, उपाध्याय है, साधु है–सभी साधना करने वाले हैं। नवकार पूरा अध्यात्ममय है। यह भौतिक नहीं है। देवी-देवता का नाम भी नहीं है, केवल वीतरागता, १४ पूर्वों का सार है। नवकार का जप अच्छी तरह करें तो अच्छी कर्म निर्जरा का मौका मिल जाए। इसमें केवल आत्मा के कल्याण की बात है। हालाँकि और भी लाभ मिल सकते हैं, लेकिन हो जब तक आत्मा के लिए करना चाहिए। कोई एक पद लेकर करना चाहे तो एक पद का जाप भी कर सकते हैं।

**साध्वी कल्पलता :** इसमें कुछ फर्क पड़ता है क्या? एक पद को करें या पूरे नवकार का करें?

**आचार्यप्रवर :** एक पद में कुछ सुविधा हो जाती है। मैंने एक बार इनको (साध्वीप्रमुखाश्री) बताया था कि णमो सिद्धाणं का अगर जप कर सकें तो करें। जिसमें मन लगे, वो जप करना चाहिए। वर्तमान में सिद्ध अपने सामने नहीं है, अर्हत् भी अपने देखे हुए नहीं है। आचार्य अपने सामने हैं। नवकार के भीतर आचार भी आ गया, ज्ञान भी आ गया और साधना भी आ गई।

आप सुखसाता रखावें, समता रखावें।

मंगलपाठ उच्चरित कर आचार्यप्रवर जब पुनः कक्ष से लौटने लगे तब शासनमाता ने पूज्यप्रवर को कृतज्ञभाव से प्रदक्षिणापूर्वक वंदन किया। (क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**